• वर्ष ६५ • अंक ७ • मूल्य ₹२०

अप्रैल (प्रथम) २०२३

पाक्षिक

परोपकारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द गुरुकुल आश्रम जमानी, इटारसी के वार्षिकोत्सव पर उपदेश करते स्वामी सत्येन्द्र परिव्राजक एवं भजनोपदेशक पं. भूपेंद्र सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६५ अंक : ०७

दयानन्दाब्द: १९९

विक्रम संवत् - चैत्र शुक्ल २०८०

कलि संवत् - ५१२४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२४

▪

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

▪

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

▪

मुद्रक-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

▪

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अप्रैल-प्रथम, २०२३

अनुक्रम

०१. घर वापसी के बाद?	सम्पादकीय	०४
०२. महर्षि दयानन्द का मूल्याङ्कन-४	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०५
* परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम		०८
०३. अनुभव का सुरमा....	श्री ओम्मुनि	०९
०४. ईश्वर से शिकायत है!	मुनि सत्यजित्	११
०५. महर्षि दयानन्द जी दूसरी जन्म...	श्री देवमुनि	१२
०६. अग्नि सूक्त-४१	डॉ. धर्मवीर	१३
०७. व्यवहार में वेद	मुनि ऋतमा	१६
०८. कविता लिखना तक भी मित्रो....	डॉ. रामवीर	१८
०९. श्रीराम - रामायण के आलोक में	आ.रामनिवास गुणग्राहक	१९
१०. संस्था समाचार	श्री ज्ञानचन्द	२४
११. विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली-२०२३	श्री दीपक आर्य	२५
* सभा एवं पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ		२६
* योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२८
* आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर		२९
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३०
१२. संस्था की ओर से....		३२
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

घर वापसी के बाद?

संसार में उपासना पद्धतियों और उपास्य के भेद के कारण अनेक सम्प्रदाय/मत हैं। प्राय: ये सभी अपने को धर्म मानते हैं और अन्यों द्वारा स्वीकृत को धर्म की सीमा से बाहर रखते हैं। अनेक इस प्रकार के भी हैं, जो अन्य उपास्य या उपासना पद्धति मानने वालों को अपने मत/धर्म में सम्मिलित करना चाहते हैं। स्वेच्छा से कोई नहीं आना चाहता है, तो बलपूर्वक भी अपने सम्प्रदाय में मिलाने का पुरजोर प्रयत्न करते हैं। जो इनमें सम्मिलित न हो, उन्हें जीवन-धन का अधिकार नहीं है। इतिहास के अनेक सन्दर्भ हैं कि विश्व के अनेक भागों में इस प्रकार मतान्तरण या धर्मान्तरण हुए हैं। इस प्रकार मतान्तरित व्यक्ति या भविष्य में उसके वंशज जब अपने पूर्व पुरुषों की मान्यताओं को स्वीकार कर वापस अपने पूर्व मत/धर्म में वापसी करते हैं या करना चाहते हैं, तो उनके सामने अनेक कठिनाईयाँ आ खड़ी होती हैं।

नवीन सन्दर्भ उत्तरप्रदेश से सम्बन्धित है। श्री जितेन्द्र नारायण त्यागी (पूर्व नाम- सैयद वसीम रिजवी) ने घरवापसी की, किन्तु उनकी कठिनाईयों को लेकर सोशल मीडिया पर पर्याप्त लेखा-लेखी हुई। स्वयं त्यागी ने भी अपनी पीड़ा व्यक्त की है। यह पीड़ा किसी सीमा तक विचारणीय तो है ही। कोई व्यक्ति जब घर वापसी करता है, तब उसके सामने अनेक प्रश्न होते हैं। यदि वह अकेला लौट रहा है, तब उसका पारिवारिक परिवेश पूरी तरह से बदल जाता है या यों कहें कि परिवार समाप्त हो जाता है।

मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कारण परिवार उसकी आवश्यकता भी है और कमजोरी भी। नए धर्म में लम्बे समय तक इस परिवेश की प्राप्ति सम्भव नहीं दिखाई देती। सपरिवार वापसी करने की स्थिति में यह समस्या कुछ सीमा तक हल हो जाती है।

सपरिवार वापसी करने वालों के समक्ष एक अन्य समस्या है कि उनके पारिवारिक सम्बन्ध किनके साथ स्थापित होंगे? यह स्वाभाविक है कि आनेवाला परिवार अनेक पीढ़ियों से जिन संस्कारों और रीति-रिवाजों में रचा बसा है, वे उसके अवचेतन में संग्रहीत संस्कार कहीं न कहीं और कभी न कभी उसकी स्थिति ऐसी कर देते हैं कि दूसरे व्यक्ति उसे सहन करने और समझने का सामर्थ्य ही नहीं रखते, जिससे आने वाला अपने को अवांछित और उपेक्षित मानने लगता है। एक अन्य भी कठिनाई है कि उनके बच्चों के वैवाहिक सम्बन्ध कहाँ स्थापित हों? सैद्धान्तिक न सही, किन्तु यह सब से बड़ी कठिनाई है। घर वापसी में यह सबसे बड़ा अवरोध है। एक बड़े सम्मेलन में एक विद्वान् द्वारा निमन्त्रित करने पर एक राज्य के प्रमुख व्यक्ति (वह सज्जन राज्य सरकार में मन्त्री भी रहे हैं तथा अपनी जाति के प्रमुख नेता रहे हैं।) ने कहा था- 'दादा रहने दो, हम आ तो जाएंगे, किन्तु यह बताओ हमारे लड़कों के विवाह कौन करेगा? आप हमारी लड़कियाँ तो ले लेंगे, किन्तु अपनी लड़की नहीं देंगे।' जिस क्षेत्र ने इस समस्या का समाधान करने का साहस दिखाया, वहाँ घर वापसी सफल रही, किन्तु दुर्भाग्य से घरवापसी की बात करने वाले हिन्दू समाज ने इस ओर सार्थक प्रयास नहीं किया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु है- घर वापसी करने वाले का आर्थिक पुनर्वास। व्यक्तिगत रूप से आने वाले के लिए यह और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्यसमाज अजमेर ने सन् १८८३ में सीताबाई की शुद्धि की थी। वह ईसाई मत से आई थीं। आर्यसमाज ने उस समय १०/- दस रुपये मासिक की व्यवस्था की थी तथा उनके रोजगार की व्यवस्था का प्रयत्न भी किया था। आज इस ओर विशेष रूप से चिन्तन एवं उद्यम करने की आवश्यकता है।

यदि हिन्दू समाज अपनी संस्कृति और राष्ट्र का हित-चिन्तन चाहता है, तो उसे बृहत्तर रूप से इन कठिनाईयों को दूर करने पर विचार करना ही होगा, अन्यथा कुछ भी उपलब्धि नहीं होगी।

विशेष रूप से धर्माचार्य इस विषय पर समाज का सामूहिक नेतृत्व करेंगे तो श्रेयस्कर होगा।

-डॉ. वेदपाल

महर्षि दयानन्द का मूल्याङ्कन-४

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

महर्षि दयानन्द जी के जीवन काल में ही देश-विदेश के लेखकों ने, उनके व्यक्तित्व तथा कार्यों का मूल्याङ्कन करने वालों ने बहुत कुछ लिखा और उनकी निन्दा में लिखने वालों ने भी उनके जीवनकाल में उनके विरुद्ध लिखने में कोई कमी न छोड़ी। तब उनके साथ कौन था?

१. नित्य अनादि सर्वव्यापक ईश्वर

२. और अनादि ईश्वर का ज्ञान नित्य अनादि वेद

आर्यसमाज की स्थापना तो बहुत बाद में सन् १८७५ में की गई। सांसारिक दृष्टि से ऋषि अकेले थे और कुल जगत् उनका विरोधी था। कविरत्न प्रकाश जी ने उनका मूल्याङ्कन करते हुये अपने एक गीत में ठीक ही तो मूल्याङ्कन किया-

था कुल जगत् विरोधी, तिस पर ऋषि दयानन्द।
वैदिक धर्म ध्वजा को, फहरा गया अकेला।

आर्य धर्म के ध्वजवाहक ऋषि के अवैदिक मतों से अनेक शास्त्रार्थ हुये। संवाद तो सदा ही वे सब से किया करते थे। ऋषि के जीवन काल में 'ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव पर' इस्लाम आदि मतों से शास्त्रार्थ होते ही रहते थे। मुसलमानों की मान्यता यह रही कि ''ईश्वर जो चाहे कर सकता है।''

ऋषि की मान्यता यह रही कि परमात्मा सृष्टि नियम विरुद्ध तथा अपने गुण, कर्म और स्वभाव के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता। ऋषि के बलिदान के पश्चात् भी कराची आदि कई नगरों में इसी विषय पर आर्यों के मुसलमानों के साथ कई बड़े-बड़े शास्त्रार्थ हुये। प्रतिपक्षी मौलवी ने बड़े जोश से यह बात दोहरा-दोहरा कर कही कि अल्लाह कादिरे मुतलिक (सर्वसामर्थ्य वाला कर्त्ता) होने से जो चाहे सो कर सकता है।

ऋषि के जीवनकाल में अपूर्व विजय- आर्यसमाज के प्रवक्ता श्री महाशय चिरञ्जीलाल 'प्रेम' की बोलने की बारी आई तो आपने मात्र एक ही पंक्ति में मौलाना के कथन की धज्जियाँ उड़ाते हुये यह चुनौती दे दी, **''अपने अल्लाह से कहो कि वह मुझे इस लोक में बहिष्कृत करके वहाँ फेंक दे जहाँ वह नहीं है या जहाँ उसका राज्य नहीं है।''**

ऐसा सरल स्वाभाविक सब की समझ में आने वाला यह कथन व तर्क सुनकर श्रोताओं ने करतल ध्वनि से इसका स्वागत किया। मौलाना आयें बायें शायें करता ही रह गया। कोई उत्तर न सूझा।

हम अपने प्रबुद्ध पाठकों को बता दें कि ऋषि के सत्संग का ही यह प्रभाव था कि ऋषि के प्रेमी मुसलमानों के विद्वान् व सर्वमान्य नेता सर सैयद अहमद ने ऋषि के जीवनकाल में ही यह लिख दिया, **''अल्लाह चाहे भी तो मुझे अपने साम्राज्य से कतई नहीं निकाल सकता।''**

सर सैयद की विशालकाय जीवनी 'हयाते जावेद' में मौलानी हाली ने सर सैयद का यह वाक्य उद्धृत किया है। यह ऋषि के वेद ज्ञान तथा पाण्डित्य की एक अद्भुत विजय थी। ऋषि का मूल्याङ्कन करने वाले विद्वानों व इतिहासकारों को उनके ऐसे स्वाभाविक, विज्ञान सम्मत तर्कों को संग्रहीत करके फिर उनका मूल्याङ्कन करना चाहिये। अब आर्यसमाज के उत्सवों, सम्मेलनों में आर्य विद्वान् ही ऐसे बेजोड़ तर्कों को जनता तक नहीं पहुँचाते। अब तो ऋषि के पत्रव्यवहार साहित्य के नये-नये संस्करण व संग्रह छप चुके हैं। इन्हें ऋषि के मूल्याङ्कन का आधार बना कर बहुत हृदयस्पर्शी विचार दिये जा सकते हैं।

ऋषि की धाक तथा साख पश्चिम में- हिन्दुत्व की दुहाई देने वाले लोग तथा सरकार स्वामी विवेकानन्द जी के शिकागो के भाषण की दुहाई यदा कदा देकर

ऐसा दर्शाते हैं कि अमरीकनों ने इनकी ज्ञान सम्पदा गरुड़ पुराण आदि को सम्मान देकर स्वीकार कर लिया। इन लोगों को इतना तो ज्ञान होगा ही कि मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक My Indian Friends में स्वामी विवेकानन्द की तो प्रशंसा की है और स्वामी जी मैक्समूलर की प्रशंसा करते रहे और उसी मैक्समूलर ने श्रीकृष्ण महाराज की निन्दा करते हुए गाली से भी घटिया शब्दों का प्रयोग किया है। स्वामी विवेकानन्द तथा हिन्दुत्ववादियों ने उसका प्रतिवाद करते हुये सवा सौ वर्ष में एक वाक्य नहीं लिखा।

आर्यसमाज ने तब भी मैक्समूलर की पोल खोली और अब फिर 'मैक्समूलर का एक्सरे' नाम की एक मौलिक, खोजपूर्ण व धारदार पुस्तक श्रीकृष्ण के सम्मान के लिये दिल्ली से प्रसारित की जा चुकी है।

अमरीका से छपा ऐसा पहला लेख- आर्यसमाज की सभा संस्थाओं का प्रमाद देखिये कि ये प्रबल आन्दोलन छेड़कर देशवासियों को इतना भी नहीं बता सके कि आधुनिक काल में जिस भारतीय विचारक, नेता, सुधारक, कुरीति निवारक ऋषि महर्षि का अमरीका के एक प्रतिष्ठित पत्र में सर्वप्रथम चित्र तथा जीवन का अद्‌भुत मूल्याङ्कन किया गया वह वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जी थे। यह लेख आर्यसमाज की स्थापना के पाँच वर्ष पूरे होने से भी पहले छपा था।

वेद विरुद्ध हिन्दुओं की एक-एक कुरीति के निवारण की इस लम्बे लेख में अच्छी चर्चा है। जातपात, ऊँच नीच, अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, बालविवाह, बहुविवाह, बहु देवतावाद, अनमेल विवाह आदि सब पर इस लेख में लिखा गया है। ईश्वर एक है उसी की उपासना करनी योग्य है। सबको प्रभु की वाणी वेद के सुनने सुनाने, पढ़ने पढ़ाने का ऋषि ने पुनः अधिकार दे दिया है।

कोई वेद से प्रतिमापूजन का प्रमाण दिखावे- उसकी चुनौती है कि कोई पण्डित वेद से मूर्तिपूजा की पुष्टि का कोई प्रमाण दिखा सके। कोई वेद से मूर्ति पूजा का प्रमाण नहीं दिखा सका। उस लेख में छपा है कि देशभर का कोई पण्डित प्रमाण नहीं दिखा सका।

ऋषि को सरकारी संरक्षण नहीं चाहिये- इस लेख में स्पष्ट शब्दों में लिखा गया है आर्यसमाज की उन्नति के लिये न तो इस निडर संन्यासी को सरकार का संरक्षण चाहिये और न ही समर्थन। इस जैसा मूल्याङ्कन किस इतिहासकार ने गत ७५ वर्षों में किया है? कौन लीडर आज इस विलक्षणता के लिये ऋषि का यशोगान करता है? आये दिन ऋषि जी पर लिखनेवाले, लेखक तथा इतिहासकार ऋषि का मूल्याङ्कन करते हुये क्यों यह भूल जाते हैं कि अलीगढ़ आन्दोलन का जन्म गोरों के आशीर्वाद से हुआ। उन्हीं के ऐतिहासिक महत्त्व के दिन पर हुआ। उन्हीं के सहायता से सब कुछ (कर्मकाण्ड) किया गया।

आर्यसमाज की स्थापना कैसे?- इसके विपरीत ऋषि जी ने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना व यज्ञकर्म से आर्यसमाज की स्थापना कर दिखाई। किसी गोरे अधिकारी को, गवर्नर आदि को आने की ऋषि ने विनती ही न की। दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि ऋषि जी का मूल्याङ्कन करते समय ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व की इन छोटी-बड़ी बातों पर न तो कोई खुलकर लिखते हैं और न ही तुलनात्मक विवेचन करते हैं।

अन्धविश्वासों व बुराइयों से किसने युद्ध छेड़ा?- आज हिन्दुओं के हित की दुहाई देने वाले इतना तो बतायें कि जिनका नाम यह रटते हैं उन्होंने देश की, हिन्दू समाज की किस बुराई यथा अस्पृश्यता, बाल विवाह, विधवाओं की दुर्दशा, देवादासी कुप्रथा, सबके मन्दिर प्रवेश के लिये किस कुप्रथा को मिटाने के लिये आन्दोलन किया, कष्ट झेले और बलिदान दिये? ऋषि के समाज का रक्तरंजित इतिहास और ऋषि का अपना बलिदान उसके मूल्याङ्कन की महिमा बताने के लिये क्या कम है?

पहला अन्तःजातीय विवाह- आज देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सब पार्टियाँ जातपाँत व आरक्षण

के सहारे जी रही हैं। याद रखिये देश में पहला विवाह जो जाति बन्धन तोड़कर इस युग में हुआ वह आर्यसमाज स्थापना वर्ष सन् १८७५ में आर्यसमाजी श्यामजीकृष्ण वर्मा का हुआ। हिन्दू तो तब ऐसे साहसिक पग उठाने की सोच ही नहीं सकते थे। देश के समाज सुधार के इतिहास को नया मोड़ देने वाली इस क्रान्तिकारी घटना की उपेक्षा करके कौन महर्षि का मूल्याङ्कन कर सकता है?

ऋषि दयानन्द ने जातिवाद अथवा जन्माभिमान के कारण उत्पन्न भेदभाव के उन्मूलन का जो आन्दोलन छेड़ा उसे उनकी शिष्य परम्परा के नेताओं तथा विद्वानों ने आगे बढ़ाने में बहुत सन्तोषजनक सफलता प्राप्त की, परन्तु राजनीतिक दलों ने अपने-अपने स्वार्थ से पुनः इस सामाजिक महारोग को बढ़ा दिया है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इतिहास बदल डाला- आगे एक विशेष घटना देकर पाठकों को हम यह बताना चाहते हैं कि इस प्रकार की कई अद्‌भुत घटनायें ऋषि दयानन्द की जनजागरण को देन के प्रभाव का मूल्याङ्कन करने में बहुत सहायक हैं, परन्तु इनकी गवेषकों ने उपेक्षा की या फिर खोज न की। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह से पूर्व एक कुम्भ के मेले पर धर्म प्रचार के लिये श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज अपने एक दो शिष्यों को लेकर पहुँचे। आर्यसमाज के साधुओं के एक अखाड़े में एक प्रतिष्ठित महात्मा ने इस भीमकाय तेजस्वी साधु को आते देखा तो ऊँची आवाज में यह कहते हुये खड़ा हो गया, ''वह स्वतन्त्र स्वामी आ गये।'' उसके ये शब्द सुनकर वहाँ बैठे सहस्त्रों साधु उसके साथ तत्काल ही श्री स्वामी जी के स्वागत सम्मान के लिये खड़े हो गये। उस समूह के खड़ा होते ही कुछ और अखाड़ों के असंख्य साधु खड़े हो गये। पौराणिक संस्कारों के कारण ब्राह्मण कभी ब्राह्मणेतर विद्वान् व संन्यासी के चरण स्पर्श, सम्मान स्वागत करने से बचता है। पौराणिक ब्राह्मण की सोच ही ऐसी है।

उस कुम्भ मेले पर यह जाने बिना कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म तो एक क्षत्रिय जाट कुल में हुआ है, सबके सब उनके स्वागत तथा अभिवादन में खड़े हो गये। यह अपने ढंग की एक निराली घटना तेजस्वी प्रतापी बालब्रह्मचारी का सम्मान तो था ही, यह इस दृष्टि से एक बहुत बड़ी क्रान्तिकारी घटना है कि यह तो आर्यसमाज का सिर ऊँचा करने वाली पहली घटना है। जाटों का भी इससे सिर ऊँचा हो गया। क्या यह महर्षि दयानन्द जी की वैचारिक विजय का ठोस प्रमाण नहीं। आजपर्यन्त ब्राह्मणेतर कुल में जन्मा कोई हिन्दू शंकाराचार्य की गद्‌दी पर नहीं बैठ सका। यहाँ असंख्य साधुओं ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का अभिवादन करके एक नया इतिहास रच दिया।

इसके उलट एक घटना- इसके विपरीत पौराणिक सोच तथा व्यवहार को दर्शाने के लिये एक घटना देनी उपयुक्त रहेगी। मैं एक बार काशी धर्म प्रचारार्थ गया। प्रसिद्ध विद्वान् ज्वलन्त जी तब सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उक्त विश्वविद्यालय के पाण्डुलिपियों के विभाग के प्रमुख संस्कृत के एक जाने माने विद्वान् तथा पाण्डुलिपियों के एक विशेषज्ञ स्कॉलर माने जाते थे। ज्वलन्त जी को वह उस विश्वविद्यालय का प्रतिभाशाली युवा छात्र मानते थे। श्रीयुत ज्वलन्त जी ने मुझे पाण्डुलिपियों का वहाँ का भण्डार देखने को कहा। मैंने झट से स्वीकृति दे दी। स्वामी सत्यप्रकाश जी भी तब काशी पधारे हुये थे। आपने ज्वलन्त जी से मेरे कार्यक्रम के बारे पूछा तो आपने कहा, ''वह पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह देखने जावेंगे।''

यह सुनते ही स्वामी जी बोले, ''मैं भी साथ चलूँगा।'' निश्चित समय पर हम तीनों चल पड़े। जब वह संग्रहालय हमें दिखाई दिया तो मैं इन दोनों को छोड़कर तीव्रगति से चलकर उस पुस्तकालय की ओर बढ़ा। ज्वलन्त समझ गये कि मैं आगे क्यों निकल गया हूँ? मैंने उस विभाग के प्रमुख को सादर नमस्ते करके बताया, ''वह संन्यासी जो ज्वलन्त जी के साथ आ रहे

हैं, वे देश-विदेश के जाने माने वैज्ञानिक अनेक विषयों के विद्वान् डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के ज्येष्ठ पुत्र हैं।''

उपाध्याय जी को काशी प्रयाग में कौन नहीं जानता? मेरा तो यह प्रयोजन था कि ऐसे पहले महान् संन्यासी का उनके द्वारा यथोचति आदर सम्मान हो, परन्तु हुआ इसके ठीक उलट। वह संस्कृतज्ञ समझ गया कि कायस्थ कुल में जन्मा साधु है। उसने स्वामी जी को चरण स्पर्श करके नमस्ते तो क्या करनी थी शीश झुकाकर के भी नमस्ते न की। मेरे घायल हृदय से यह आवाज निकली, ''हाय रे पौराणिक हिन्दू!'' जब वह विभाग प्रमुख स्वामी जी को और मुझे संग्रहालय दिखा रहा था तो श्री स्वामी जी ने उसे कहा, ''आपके यहाँ सबसे पुरानी पाण्डुलिपि कब की है?''उसने एक पाण्डुलिपि दिखाते हुये कहा, ''इतने सौ वर्ष पुरानी है।''

अब स्वामी जी ने आर्यविद्वानों वाली धाक जमाते हुये उससे भी कहीं अधिक पुरानी पाण्डुलिपियाँ जो विभिन्न देशों में देख रखीं थीं उनका परिचय दिया। आर्यसमाज में भले ही विभिन्न विषयों के मर्मज्ञ विद्वानों की संख्या औरों से भले ही अधिक नहीं थी, परन्तु हमारे पं. रामचन्द्र देहलवी, आचार्य उदयवीर औरों पर भारी पड़ते थे। विश्व इतिहास में ऋषि दयानन्द की शिष्य परम्परा के पहले विख्यात वैज्ञानिक जिसने संन्यास लिया और वह थे डॉ. सत्यप्रकाश। कहिए ऋषि का मूल्यांकन करते हुए इस तथ्य को ध्यान में रखना कितना आवश्यक है।

स्वामी जी की विनम्रता बड़प्पन- ऊपर जो काशी की घटना दी गई है इससे उलट एक घटना देना और भी आवश्यक है। गांधीवादी समाज सेवक तथा साहित्यकार वियोगी हरि जी अबोहर पधारे तो मैं एक मित्र संग उनसे खुले समय में बातचीत करने पहुँच गया। तब किसी प्रसंग में वियोगी जी के प्रयाग की कोई चर्चा चल पड़ी। श्री वियोगी हरि जी ने अत्यन्त भाव भरित हृदय से बताया, ''मैं एक दिन प्रयाग की सड़क पर पैदल जा रहा था। तब मैंने देखा कि एक संन्यासी मेरे सामने से आ रहा है। मेरे निकट पहुँचकर उस संन्यासी ने बड़ी श्रद्धा तथा विनम्रता से मेरे पाँव छूकर मुझे नमस्ते कही। मैंने उस महात्मा से कहा, हैं! महात्मा जी आप कौन? मैं सांसारिक व्यक्ति और आप संन्यासी होकर मेरे पाँव छू रहे हैं?''

यह सुनकर अत्यन्त विनम्रता से वह संन्यासी बोला, ''मैं भी आपका शिष्य रहा हूँ। मैंने आप द्वारा संचालित हिन्दी साहित्य की परीक्षा सत्यप्रकाश के रूप में दी थी।'' वियोगी जी ने गद्‌गद होकर स्वामी जी के बड़प्पन की प्रशंसा की। यह है भेद पौराणिक सोच तथा ऋषि दयानन्द की शिक्षा, चिन्तन और व्यवहार का। अब ऋषि के मूल्याङ्कन की बहुत कुछ समझ लगी होगी।

आगे फिर कभी।

वेद सदन, नई सूरज नगरी, अबोहर, पंजाब

परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

०१.	आर्य वीर दल शिविर	-	१४ से २१ मई-२०२३
०२.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	११ से १८ जून-२०२३
०३.	आर्य वीरांगना दल शिविर	-	१९ से २५ जून-२०२३
०४.	दम्पती शिविर	-	२४ से २७ अगस्त-२०२३
०५.	डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस	-	०६ अक्टूबर-२०२३
०६.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	२९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर-२०२३
०७.	ऋषि मेला	-	१७, १८, १९ नवम्बर-२०२३

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

अनुभव का सुरमा - आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा

श्री ओम्मुनि

शिवपूजन सिंह कुशवाह जी बड़े विद्वान् हुए हैं। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी। गुरुकुल में पढ़ाते भी रहे। काफी पुरानी बात हो गई। मैंने सार्वदेशिक पत्र में पढ़ा कि कुशवाह जी की आँखें खराब हो गई। पढ़ने-लिखने में कठिनाई होने लग गई। उन्हें आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है।

इस समाचार को मैंने पढ़ा और मन में एक विचार आया कि ऐसे विद्वान् को अवश्य आर्थिक सहयोग करना चाहिये। मैंने तुरन्त पाँच सौ रुपया मनिआर्डर के द्वारा पण्डित जी को उनके पते पर भेज दिया।

पण्डित जी के पास मनिआर्डर पहुँच गया। उसके दो-तीन बाद ही पण्डित जी पाँच सौ रुपया मनीआर्डर द्वारा वापस आ गया। मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ कि पण्डित जी को आवश्यकता थी। अखबार में समाचार छपा। इस कारण ही तो मैंने पण्डित जी को आर्यसमाज से सहयोग राशि भिजवाई, परन्तु पण्डित जी ने यह राशि वापस क्यों लौटा दी?

मैंने तुरन्त पण्डित जी को पत्र लिखकर पूछ लिया कि आपने रुपये क्यों लौटा दिये। क्या अधिक पैसों की आवश्यकता थी?

पण्डित जी ने मुझे पोस्टकार्ड द्वारा उत्तर देते हुए लिखा कि भाई झंवर जी मैंने पैसे इसलिये लौटा दिये थे कि मुझे पैसों की आवश्यकता नहीं रही।

कारण यह था कि मेरी आँखों में मोतियाबन्द हो गया था। स्पष्ट दिखना बन्द हो गया था। मैं गुरुकुल में पढ़ाता था तो मेरा पढ़ाना भी बन्द हो गया। मैंने कहीं पढ़ा था कि आँख में लोंग घिसवा लगाने से मोतियाबिन्द कट जाता है व रोशनी पुनः लौट आती है।

मैंने आँख में लोंग की ऊपर की टोपी हटाकर पत्थर पर चन्दर की तरह घिसकर काजल की तरह लगाना शुरु कर दिया। लोंग को पानी में घिसकर लगाया। उसे कुछ दिनों में मोतिया कट गया व मुझे स्पष्ट दिखने लग गया। मेरा काम पूर्ववत चलने लग गया। इसलिये आपको रुपये लौटा दिये।

पत्र पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। पण्डित जी के इस व्यवहार को देखकर उनके प्रति श्रद्धा भी बढ़ गई। अभी लगभग २ माह पहले मैंने भी अपनी आँखों को दिखाया तो डॉक्टर ने कहा कि आपकी बाईं आँख में मोतिया पक गया है आप आपरेशन करवा लें। मैं आपरेशन की तैयारी में लग गया। उसी समय मुझे पण्डित जी की वह बात याद आ गई कि उनका मोतिया लोंग घिसकर लगाने से ठीक हो गया था। क्यों नहीं इस कार्य को मैं भी कर लूँ।

मैंने तुरन्त अपने घरवालों को बताया कि लोंग घिसक डालने से मोतिया कट जाता है, परन्तु उन्होंने कहा कि आँख खराब हो सकती है। लोंग आँख में डालना उचित नहीं रहेगा।

मैंने सबको समझाया कि पण्डित जी तो आज संसार में नहीं रहे न ही उनका पत्र भी। वह भी खो गया, परन्तु पण्डित शिवपूजनसिंह जी का बताया यह नुस्खा मैं आजमाऊँगा। मैंने उस नुस्खे को लगभग १५ दिन तक आजमाया। लोंग को घिसकर प्रतिदिन आँख में डालता रहा। कुछ जलन जरुर होती थी, परन्तु प्रभु कृपा से पण्डित जी के बताये नुस्खे से मेरी भी आँख का मोतियाबिन्द कट गया व मुझे स्पष्ट दिखने लग गया।

आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा का परिचय-

लेखनी के धनी, सिद्धान्तमर्मज्ञ तथा प्रतिपक्ष का खण्डन करने में तत्पर श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा का जन्म 1 जून 1924 को बिहार प्रान्त के सारण जिलान्तर्गत गौरा ग्राम में हुआ था। इनकी व्यवस्थित पढ़ाई मिडिल कक्षा तक ही हुई। कालान्तर में आपने प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में मैट्रिक से लेकर एम.ए. (संस्कृत) तक की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। हिन्दी विद्यापीठ देवधर (बिहार)

की साहित्यालंकार तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षाएं भी आपने उतीर्ण कीं। 1983 में आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से साहित्य-शास्त्री की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 1941 से 1944 तक कुशवाहा जी विरक्त अवस्था में रहे। 1 नवम्बर, 1944 को वे प्रसिद्ध दानवीर श्री धनीराम भल्ला के सम्पर्क में आये तथा उनके कार्यालय में 8 वर्ष तक कार्य किया। पुनः कानपुर की प्रसिद्ध जूतों की कम्पनी फलैक्स के कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य किया। श्री कुशवाहा ने अपने लेखकीय जीवन में आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर सैकड़ों लेख लिखे तथा प्रतिपक्षियों के आक्षेपात्मक विचारों का सप्रमाण उत्तर दिये। कुशवाहा जी ने अपने कानपुर निवास काल में दयानन्द शोध संस्थान की स्थापना की थी जिसके अन्तर्गत रुद्र-ग्रन्थमाला के अन्तर्गत उनके कई ग्रन्थ छपे। जयदेव ब्रदर्स, बड़ोदा ने भी उनके कई ग्रन्थ प्रकाशित किये। आचार्य कुशवाहा जी ने गुरुकुल गौतमनगर में रहते हुए वहां के ब्रह्मचारियों को अध्यापन भी कराया।

आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा जी ने बड़ी संख्या में छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे हैं। उनके लिखे व प्रकाशित ग्रन्थ हैं, 1- ऋग्वेद के दशम मण्डल पर पाश्चात्य विद्वानों का कुठाराघात (२००७ विक्रमी), २- सामवेद का स्वरूप (२०१२ वि.), ३- अथर्ववेद की प्राचीनता (२००६ वि.), ४- महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्यानुशीलन (२००७ वि.), ५-गायत्री माहात्मय (२०१४ वि.), ६- वैदिक शासन पद्धति (२०१० वि.), ७- क्या वेदों में मांसाहार का विधान है?, ८- नीर क्षीर विवेक (२०१८ वि.), ९- वैदिक सिद्धान्त मार्तण्ड (२०२० वि.), १०- आर्यसमाज में मूर्तिपूजाध्वान्त निवारण (२००७ वि.), ११- शिवलिंगपूजा पर्यालोचन (१९६०), १२- अष्टादश पुराण परिशीलन (१९६१ ई.), १३- नारद पुराण का आलोचनात्मक अध्ययन (२०२८ वि.), १४- मार्कण्डेय पुराण : एक समीक्षा (२०२९ वि.), १५- वामनावतार की कल्पना (२००७ वि.), १६- सत्यार्थप्रकाश भाष्य (तृतीय समुल्लास) (१९५५ ई.), १७- महर्षि दयानन्द की दृष्टि में 'यज्ञ' (२०१० वि.), १८- आर्यसमाज के द्वितीय नियम की व्याख्या (२००६ वि.), १९- भारतीय इतिहास और वेद (२००७ वि.), २०- वैदिक काल में तोप और बन्दूक, २१- पाश्चात्यों की दृष्टि में वेद ईश्वरीय ज्ञान (२०११ वि.), २२- वैदिक देवता रहस्य, २३- 'वैदिक एज' पर समीक्षात्मक दृष्टि (१९५८ ई.), २४- उपनिषदों की उत्कृष्टता (२०१० वि.), २५- भारतीय इतिहास की रूपरेखा पर एक समीक्षात्मक दृष्टि, २६- बाइबिल में चर्चित बर्बरता तथा अश्लीलता का दिग्दर्शन (२०११ वि.), २७- ईसाई दम्भ का प्रत्युत्तर (२०११ वि.), २८- आर्य दयानन्द सरस्वती और मसीही मत का पर्यालोचन, २९- पाश्चात्यों की दृष्टि में इस्लामीमत प्रवर्तक (२०१२ वि.), ३०- इस्लाम के स्वर्ग और नरक पर महर्षि दयानन्द की आलोचना का प्रभाव (१९६३), ३१- आर्यों का आदि जन्म स्थान निर्णय (१९६९ ई.), ३२- महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को समझने में पौराणिकों का भ्रम (१९६० ई.), ३३- क्या वेद में मृतक श्राद्ध है?, ३४- श्री सत्य साईं बाबा का कच्चा चिट्ठा (१९७७ ई.), ३५- कुशवाहा क्षत्रियोत्पत्ति मीमांसा, ३६- राठौर कुलोत्पत्ति मीमांसा, ३७- जादू-विद्या रहस्य, ३८- शतपथ ब्राह्मण का भ्रष्ट भाष्य (१९७९ ई.), ३९- इन्द्र अहल्या उपाख्यान का वास्तविक स्वरूप और महर्षि दयानन्द (१९८३ ई.), ४०- आचार्य महीधर और स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद माध्यन्दिन भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन का आलोचनात्मक अध्ययन, ४१- गायत्री मीमांसा (१९८७ ई.), ४२- सती दाह : एक लोमहर्षक प्रथा? (१९८७ ई.), ४३- हनुमान का वास्तविक रूप (१९८६), ४४- मनोवैज्ञानिक जादू विद्या के चमत्कार (१९०० ई.), ४५- पद्मपुराण का आलोचनात्मक अध्ययन (१९९०) आदि।

पूर्व मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर।
मो. ९९५०९९९६७९

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण

ईश्वर से शिकायत है!

श्री मुनि सत्यजित्

प्रभु के प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग से यह जीवन चल रहा है। यह प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग इतना अधिक है, इतना महत्त्वपूर्ण है, इतना मौलिक है, इतना आधारभूत है कि बिना इसके जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सब कुछ तो ईश्वर के आधार पर चल पा रहा है, चाहे हम ईश्वर को मानें या न मानें ईश्वर के प्रति श्रद्धा हो या न हो, ईश्वर को स्मरण करें या न करें, ईश्वर से प्रार्थना करें या न करें। कितना आश्चर्यजनक है यह सब। कितना विचित्र है यह सब!

हम जानें या न जानें, ईश्वर हमें जान रहा है। हम मानें या न मानें, ईश्वर हमें मान रहा है। हमारी दृष्टि में ईश्वर हो या न हो, ईश्वर की दृष्टि में हम हैं। हम ईश्वर से कितना भी बचने-छिपने-छूटने का प्रयास करें, ईश्वर अपने से न बचने देता है, न छिपने देता है, न छूटने देता है। ईश्वर की उपेक्षा हमारे द्वारा होती ही जा रही है, न जाने कब से, जन्म-जन्मान्तर से पर वह तो उपेक्षा कभी कर नहीं रहा, उपेक्षा कर ही नहीं सकता।

उपेक्षा के चलते दूसरे हमसे शिकायत करते हैं, शिकायत रखते हैं। दूसरों की हमारे प्रति हो रही उपेक्षा के प्रति हम शिकायत करते हैं, शिकायत रखते हैं। जब दूसरे हमारे से उपेक्षा करते हैं तो हमें बुरा लगता है, कष्ट-दुःख होता है, क्योंकि उस उपेक्षा से हमारे ऊपर दुष्प्रभाव आता है। वह दुष्प्रभाव भौतिक हो या अभौतिक, हमारे विचार-चिंतन का विषय बनता है। यहीं से शिकायतों, उल्हानों का स्रोत निकल पड़ता है।

ईश्वर की हमारे से उपेक्षा ढूंढने चलें! अन्यों की उपेक्षा से दुष्परिणाम आते हैं। उपेक्षा व दुष्परिणाम में व्याप्ति बन चुकी है। अच्छे श्रेष्ठ-योग्य व्यक्ति हमारी उपेक्षा करें तो दुष्परिणाम आ ही जाते हैं। जीवन में बचपन से बहुत परिश्रम करते चले आने पर भी अनेक दुष्प्रभाव होते अनुभव में आते ही चले जाते हैं। दुष्प्रभावों से रहित जीवन बन नहीं पा रहा है। जब ईश्वर ही का सहयोग जीवन का आधार है तो जीवन में आने वाले दुष्प्रभाव में भी उसका मुख्य कारण मान ही लेते हैं। अन्यों को कारण मानें तो भी वह ईश्वर तो सर्वशक्तिमान् है, वह अन्य कारणों को हटा सकता है, मेरे जीवन को दुष्प्रभावों से रहित कर सकता है, पर जीवन को दुष्प्रभावों से मुक्त क्यों नहीं कर देता? ईश्वर से शिकायत है। ईश्वर से शिकायतें हैं। ईश्वर से शिकायतों-उल्हानों का स्रोत चलता चला जा रहा है।

ईश्वर को मानकर, उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास रखकर की जा रही उपासनाओं में उसकी स्तुतियाँ इन शिकायतों-उल्हानों पर निर्मित हो रही हैं। प्रार्थनाओं का आधार भी ये शिकायतें-उल्हाने बने हुए हैं। संसार से हताश-निराश बना ईश्वर से ही तो अपेक्षा रखूँगा। संसार के लोगों से ठगा-हारा ईश्वर से ही तो आशा रखूँगा। ईश्वर से अपेक्षा की कोई सीमा नहीं है। सारी अपेक्षायें अब उसी से हैं। अपने से भी आशा नहीं बची, बस ईश्वर से आशा बची है। सारी अपेक्षायें उसी से हैं।

इस ईश्वर भक्ति में चलते, इस अध्यात्म में चलते-चलते अपने सबसे प्रिय-आत्मीय ईश्वर से ही सब शिकायतें-उल्हाने बनते-बढ़ते जा रहे हैं, मन में यही सब भरता जा रहा है। भक्ति-उपासना-श्रद्धा-विश्वास का यही रूप बन गया है। प्रेम का मीठा आवरण साथ में जुड़ा ही है। शिकायतें-उल्हाने अपनों से ही तो होते हैं। अपेक्षा प्रिय-प्रियतम से ही तो की जा सकती है। जिससे शिकायत न कर पायें, उससे प्रेम कैसे कहा जा सकता

है।

हे प्रभो! तेरी प्रीति में ये मीठी शिकायतें तेरे प्रेम को बढ़ाने वाली लगती हैं। भक्ति के प्रवाह में ये शिकायतें दु:ख न देकर रस भर देती हैं। क्या तुझे मेरी ऐसी भक्ति रास आती है? तेरे स्वरूप का चिंतन इन मीठी शिकायतों में भी कुछ ठिठकन पैदा कर देता है। खट्टी-कड़वी शिकायतें तो अतीत का विषय बन चुकी हैं। तेरे प्रेम में बढ़ते मन में ये खट्टी-कड़वी शिकायतें सूखनी ही थीं, मुरझानी ही थीं। ये मीठी शिकायतें ये मधुर उल्हाने तो तेरे प्रेम में ही फले-फूले हैं। अब इनके भी सूखने-मुरझाने का समय आ गया है? क्या तेरे प्रेम के सूखने का समय आ गया है?

हे प्रभो! तूने बहुत से रास्ते दिखाये हैं, मार्गदर्शन किया है। तेरे से शिकायत है कि अब इस विषय में मार्गदर्शन क्यों नहीं कर रहा? रास्ता क्यों नहीं दिखा रहा? क्यों देर कर रहा है? मीठी शिकायतें तो तुझे प्रिय हैं। मेरी भक्ति को अब तक शुद्ध से शुद्ध बनाया है, अब और बना दे। क्या तुझसे यह एक शिकायत, बस एक शिकायत कर लूँ? तुझसे तेरी ही शिकायत कर लूँ? बहुत देर कर रहा है, बहुत देर।

महर्षि दयानन्द की दूसरी जन्म शताब्दी २१ मन घी व २१ मन सामग्री

स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल मलारना चौड़, सवाई माधोपुर। ११ हवन कुण्डों में ऋग्वेद पारायण यज्ञ ९ से १२ फरवरी २०२३ तक सम्पन्न।

वेदपाठी-ब्रह्मचारी-नरेन्द्रभूषण, नरेन्द्र, कृष्णराज, विष्णु, प्रतीक, कृष्णा, सतीश द्वारा वेदपाठ।

शोभा-यात्रा दिनाङ्क १० फरवरी प्रात: ११:०० बजे से स्वामी आत्मानन्द भवन से ग्राम के मुख्य मार्गों से-मार्ग में गुरुकुल के ब्रह्मचारी व्यायाम शिक्षक श्री दिनेश जी के नेतृत्व में एवं भय्यापुर लाड़ोत हरियाणा के ब्रह्मचारियों द्वारा मार्ग में मलखम्ब प्रदर्शन, आग के गोले से निकलना, बालकों द्वारा प्राणायाम, पद्मासन, अनेक प्रकार के करतब, तलवार, भाला, शारीरिक क्षमता के अनेक प्रदर्शन किये गये। ग्रामवासियों ने पुष्पवर्षा की और अति आनन्दित हुए।

मुख्यवक्ता- श्री मुनि सत्यजित् जी, कर्मवीर जी, स्वामी धर्मदेव जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री डॉलर बनियान के चैयरमेन श्री दीनदयाल जी गुप्ता, श्री महाशय गुलाटी जी एम.डी.एच. मसाले वाले, आ. सोमदेव जी, श्री आ. रविशंकर जी, श्री वेदमुनि जी, सत्यप्रिय जी आदि।

भजनोपदेशक- श्री पं. भूपेन्द्र जी, श्री लेखराज जी, श्री कर्मठ जी, श्री भानूप्रकाश जी, श्री दिनेश जी पथिक आदि ने ऋषि गीतों व ऋषि के गुणानुवाद में चार चाँद लगाये। जनता मन्त्रमुग्ध हुई।

सम्मान- अनेक अतिथियों का सम्मान यथायोग्य सामग्री पुस्तकें आदि देकर कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा किया गया।

विशेष- आ. सोमदेव जी की माताजी के आगमन पर विशेष-स्वागत व सम्मान सराहनीय रहा। सभी भाव विभोर हो गये। दिनाङ्क ११/०२/२३ को सायं २०१ यज्ञकुण्डों पर यज्ञ किया। सभी श्रद्धालु व ग्रामवासियों का उत्साह उत्तम एवं ऐतिहासिक रूप में रहा। प्रतिदिन प्रात: ८:३० से ११:३० एवं सायं ४:०० से ६:०० तक ११ कुण्डीय यज्ञ हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग ५००० हजार स्त्री-पुरुषों (ग्रामवासी) ने अति उत्साह से भाग लिया। सुविधा, आवास, भोजन, प्रातराश आदि में कोई कठिनाई नहीं हुई।

इस सम्पूर्ण कार्य में ट्रस्टीगण, उपाचार्य सर्वमित्र जी, उपाध्याय श्री निरञ्जन जी, कैलाश जी गुरु जी, अध्यापकगण, मुनि श्री रमेश जी आदि की भी तन-मन-धन से समर्पित सेवायें रहीं। अनेक राज्यों, ग्रामों से भक्तगण साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी पधारे, उनका यथोचित सत्कार व सम्मान किया गया।

- देवमुनि

अग्नि सूक्त-४१

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

इस वेदज्ञान की चर्चा के प्रसंग में हम ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त की चर्चा कर रहे हैं। इस मन्त्र में उपासना का विधान किया गया है कि उपासना कैसे करनी चाहिए। इस मन्त्र का ऋषि मधुच्छन्दा है, देवता अग्नि है और इसका छन्द गायत्री है। इस मन्त्र में उपासना का समय और उपासना की विधि समझायी गई है। प्रतिदिन उपासना की जानी चाहिए, उपासना का समय प्रातःकाल और सायंकाल है। उपासना ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए, नम्रतापूर्वक होनी चाहिए। हम देख रहे थे कि उपासना ज्ञानपूर्वक कैसे होती है। जब उपासक परमेश्वर की उपासना करता है तो जैसे परमेश्वर ज्ञानवान् है वैसे हमें ज्ञान प्राप्त होता है और जैसे परमेश्वर आनन्दरूप है, उसका आनन्द भी हमें प्राप्त होता है। उसके गुणों का स्मरण करने से उसका गुण-कर्म-स्वभाव का विचार करने से, हमारे मन में भी वैसे गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है और आत्मा में उसके जो गुण हैं, उन्हीं के कारण वह सुख वाला है, हमारे अन्दर भी जब वे गुण आते हैं तो सुख उत्पन्न करते हैं। दया से, न्याय से, परोपकार से, सेवा से कोई व्यक्ति कभी भी कष्ट नहीं पाता। इस तरह के कार्य आत्मा को प्रसन्न कर देते हैं। वैसे ही जब ज्ञान से मनुष्य उपासना करता है तो मनुष्य सदा सुखी होता है। परमेश्वर के प्राप्त होने पर मनुष्य की जो स्थिति लिखी है, उसमें कहा गया है-

भिद्यते हृदय ग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

परमेश्वर पर अवर तक व्याप्त है। जब उसके पास कोई पहुँच जाता है, तो उसके अन्दर जो शंकायें थीं, जो बहुत सारे प्रश्न थे, जो मन में गाँठें बनी हुई थीं, वे सब समाप्त हो जाती हैं। जो गांठें हैं मन में, कई बार हम सोचते हैं और सोचते-सोचते हमें उसका हल कैसे होगा, नहीं पता चलता। इससे हमारे मन में एक संशय बना रहता है कि वह परमेश्वर कैसे मिलेगा? आँख से नहीं दिखता है कान से नहीं सुनाई देता है, त्वचा से स्पर्श में नहीं आता है, और क्या उपाय हो सकता है उसे जानने का? हमारे मन में ग्रन्थि रहती है। लेकिन इस उपासना को करते-करते जब उसको हम प्राप्त होते हैं तो फिर यह नहीं सोचना पड़ता कि वह आँख या कान से क्यूँ नहीं मिला, तब हमको स्पष्ट सीधा सम्बन्ध ही पता लग जाता है कि वह मेरी आत्मा में है। आत्मा से आत्मा को मैंने देखा है तो मुझे इन सब पदार्थों की आवश्यकता ही नहीं होती। जो मेरी बौद्धिक परमेशानियाँ थीं तो भी जब मैं उसके समीप पहुँचता हूँ तो उसके ज्ञान से जैसे एक व्यक्ति बहुत सारी बातें जानने का उत्सुक होकर ज्ञानवान् व्यक्ति या गुरु के पास पहुँचता है और तब उसे लगता है कि इस संसार में बहुत सारी उलझनें, बहुत सारे रहस्य, समस्यायें बहुत है उनका समाधान कैसे हो? तब गुरु

धीरे-धीरे उसकी शंकाओं का समाधान करता है। जैसे-जैसे उसकी जानकारी बढ़ती है और उसके संशय भी निवृत्त होते रहते हैं। वैसे ही परमेश्वर के जितना-जितना निकट हम जाते हैं, जितनी गहराई से उसके गुणों, कार्यों पर, स्वभाव पर विचार करते हैं हमारे संशय अपने आप निवृत्त होने लगते हैं। जैसे जाल को काट देने से प्राणी मुक्त हो जाता है, वैसे ही जब बुद्धि के संशय उपासना से काट देते हैं, तो हम स्वयं को मुक्त अनुभव करते हैं। जैसे कोई पक्षी पिंजरे से छूटकर आकाश में उन्मुक्त विचरता है, वैसे ही जब हम ग्रन्थियों से बाहर हो जाते हैं तो हमारा आत्मा भी उस परमेश्वर रूप आकाश में विचरता है और स्वतन्त्रता को, सुख को, आनन्द को, अनुभव करता है। लेकिन यह अनुभव कब हो सकता है? कहा कि यह कर्म क्षीण हो जाते हैं। यह कर्म क्षीण क्यों हो जाते हैं? कर्म तो हमारे लिए बहुत आवश्यक है, कर्म के बिना हम उपासना नहीं कर सकते, कर्म के बिना हमें ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। गीता में कहा- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते', वेद 'अकर्मा दस्युः' कहता है, कर्म किए बिना रह नहीं सकता ऐसा कहता है फिर क्षीयन्ते चास्य कर्माणि क्यूँ कहा? अभिप्राय यह है कि जब आप कहीं पहुँच जाते हैं तो फिर क्या चलते रहते हैं? आप घर से चले हैं, स्टेशन तक जाना है, आप जा रहे हैं, आपकी गति रुकती नहीं है। आप स्टेशन पर पहुँच गाड़ी में बैठ गए हैं, तब आपकी गति सामान्य रूप से रुकी हुई है, पर आप चल रहे हैं। किन्तु जब अपने स्थान पर आप पहुँच जाते हैं, फिर आपकी यात्रा समाप्त हो जाती है। तो कर्म भी यात्रा है, पहुँचने की प्रक्रिया है। उपासना करने वाले के कर्म क्षीण होते हैं, यह बात दो ही तरह से बनेगी- एक तो जो हमने कर्म इकट्ठे कर रखे हैं जिनका संग्रह हमारे चित्त में संस्कारों के रूप में है। वे भी संसार में यात्रा का साधन बने हुए हैं। संसार में हम जो कुछ कर रहे हैं, कुछ तो वर्तमान के कारण कर रहे हैं, कुछ भूत के कारण कर रहे हैं। भूत के कारण जो कर रहे हैं वो संस्कारों से बाध्य होकर कर रहे हैं। आदमी अच्छा साधक है, लेकिन किसी वस्तु को देखकर मन में लोभ आ गया और वह उस कार्य को कर बैठता है। ऐसी स्थिति में संस्कार उसको बाध्य करता है। दूसरी आवश्यकता बाध्य करती है। भूख है, प्यास है, गर्मी है, सर्दी है मुझे कर्म के लिए बाध्य करती है। मैं ज्ञान से भी कर्म करता हूँ, मैं अज्ञानपूर्वक भी कर्म करता हूँ तो हर स्थिति में मेरे से कर्म हो रहा है। वर्तमान में भी कर्म कर रहा हूँ और संस्कार रूप में भी मेरा कर्म विद्यमान है, जिसका फल मुझे पाना है। इसलिए शास्त्रकार एक बात कहता है कि उपासना से यदि आप परमेश्वर का साक्षात्कार कर लें तो उपासना एक यात्रा है। ऐसी यात्रा जो संसार से चलकर के परमेश्वर तक पहुँचती है। मैं इस उपासना का जब आश्रय लेता हूँ तो इसके माध्यम से यात्रा में जाता हूँ। यहाँ एक बात और विचारणीय है। जब मैं यात्रा में चलता हूँ, तो मैं चाहे वायुयान से भी जाऊँ तो रास्ता तो पार करना ही पड़ता है। मैं समझता हूँ कि संसार के रास्ते चल रहा हूँ तो शायद पैदल चल रहा हूँ और इसलिए संसार को अनुभव करता हूँ और यदि मैं कोई दूसरा रास्ता अपना लूँ तो हो सकता है संसार से बच जाऊँ। बच तो नहीं सकता हूँ, क्योंकि व्यवधान है, वह तो पूरा ही करना है, अन्तर केवल इतना आता है कि मैं रास्ते को धीरे-धीरे पार करता हूँ या मैं रास्ते को जल्दी-जल्दी पार करता हूँ। धीरे करने पर रास्ता तो मेरा होता है किन्तु रास्ते में आने वाले हानि-लाभ का भी मैं अनुभव करता चलता हूँ। तो उसके बहाने मेरे पास कुछ और कर्म इकट्ठे हो जाते हैं, कुछ और संस्कार बन जाते हैं। इसलिए मुझे यह रास्ता भटकाने वाले लगता है। लेकिन जब मैं उपासना के द्वारा काम करता हूँ, तब मैं चलता तो इसी रास्ते पर हूँ किन्तु तेजी से चलत हूँ। इसमें बहुत सारी रास्तें की बातें पीछे रह जाती हैं। जैसे आप गाड़ी में बैठे हैं और बाहर देखें तो ऐसा लगता है कि बाहर की चीजें दौड़कर दूसरी दिशा में जा रही हे।

तो वैसे ही जो उपासना करने वाला व्यक्ति है वो जितनी गहरी निष्ठा से, मन से, बुद्धि से उपासना करता है तो उसकी उपासना तीव्र गति वाली उपासना है और इसके कारण, वह रास्ते में आनेवाली बाधायें हैं, संकट हैं, उनसे अपने को बचाता है। इसको समझने के लिए योगदर्शन का एक सूत्र हमें समझना अच्छा रहेगा- एक प्रसंग चल रहा है कि समाधि की सिद्धि कैसे होती है, तो समाधि सिद्धि के बहुत सारे उपाय बताए। उसमें एक सूत्र बनाया **तीव्र संवेगानाम् आसन्नः** अर्थात् जिसके संवेग प्रबल है अर्थात् मुक्ति की इच्छा बहुत है, तीव्र है, वो व्यक्ति उतनी ही तीव्र गति से लक्ष्य तक पहुँचता है। इसको उपासना में मुमुक्षुत्व कहा है। हमने उपासना करने के लिए पीछे चार बातें देखी थीं जो ज्ञान चाहिए उसमें हमने पहला स्थान विवेक को दिया था, वैराग्य- ज्ञान होने के बाद बाधक वस्तुओं को हटानेका था। षट्क सम्पत्ति- वस्तुऐं हटाने के बाद अच्छे की ओर बढ़ने का था और चौथी चीज जिसे यहाँ मुमुक्षुत्व कहा गया अपने अन्दर वो तीव्रता पैदा करना जिसके द्वारा अपने लक्ष्य को जल्दी प्राप्त कर सकना सम्भव है। वो इच्छा जिस भी मनुष्य में जितनी तीव्र होगी, वह उतना ही उस कार्य के लिए तत्पर होगा, सक्रिय होगा, तीव्र गति से चलेगा। अगर मुझे किसी स्थान पर समय पर पहुँचना है तो समय पर पहुँचने के लिए मैं साधन भी वैसा ही लेता हूँ, कि मैं जल्दी पहुँचु, मेरे पास समय कम है, मैं एक स्वतन्त्र वाहन स्वीकार करता हूँ, वायुयान का आश्रय लेता हूँ। वैसे ही उपासना में भी जिस व्यक्ति के अन्दर जितना प्रबल वैराग्य होता है, जितनी अधिक संसार से विरक्ति होती है और परमेश्वर की प्राप्ति की जितनी उत्कट इच्छा होती है, इसमें उपासना ऐसा मार्ग बनाती है कि वह उपासना जितनी गहराई से जितने लम्बे समय तक की जायेगी, उससे हमारा मार्ग उतना ही छोटा हो जाएगा। जो तेजी से चलता है उसका लक्ष्य उतना ही नजदीक आता है। जो व्यक्ति धीरे-धीरे चलता है, रुक-रुक कर चलता है, उसका लक्ष्य उतनी ही देरी से आता है। जिसके अन्दर मुमुक्षुत्व है, यह शब्द ऐसे है कि मोक्ष पाने की इच्छावाला। पीने की इच्छा करने वाला पिपासु होता है। भूखा बुभुक्षु होता है, जो पढ़ना चाहता है वो पिपठिषु होता है जो जाना चाहता है जिगमिषु होता है। वैसे ही जो मोक्ष की इच्छा करता है, वो मुमुक्षु होता है। मुमुक्षु होना उपासना का आधार है। मोक्ष शब्द का मूल अर्थ है छूटना। आप यदि बन्धन का अनुभव नहीं करते तो छूटने की इच्छा पैदा नहीं होती। संसार में लोग बहुत रहते हैं, वे उपासना इसलिए नहीं करते, क्योंकि वे छूटना नहीं चाहते, वे छूटना नहीं जानते। जो जानवर बचपन से आपके घर में पला है, बड़ा होने पर उसे आप जंगल में छोड़ दें तो जंगल में जा नहीं सकता, चला गया तो बच नहीं सकता। न उसे भोजन ढूँढना आता है, न अपना बचाव करना आता है, इसलिए जब तक इस संसार में रहने वाले व्यक्ति को यह न लगे कि संसार में बहुत दुःख, कष्ट, संघर्ष है, और जब वह इस जंगल में भटकता है और दुःखों का अनुभव करता है, तब उसके अन्दर छूटने की इच्छा पैदा होती है। तो मोक्ष का अर्थ है, मुक्ति, छूटना। आदमी किससे छूटता है, बन्धा तो दिखाई नहीं देता। लेकिन बन्धन का जो अनुभव है, पराधीनता का जो अनुभव है वह बिना बन्धे भी कर सकता है। जब उसकी सीमायें आ जाती है, काम नहीं कर पाता। दुःख आ गया, उसे हटाना भी चाहता है, लेकिन हटाने का सामर्थ्य उसके पास नहीं होता, तो उसकी जो विवशता है, वह उसका बन्धन बताती है। संसार में जब कोई व्यक्ति मजबूरी का अनुभव करने लगे, विवशताजन्य दुःख जब उसे बार-बार याद आने लगें तो उसके मन में इससे छूटने की इच्छा पैदा होती है और यह बन्धन के अनुभव से पैदा होती है। इसलिए इसे मुमुक्षुत्व कहते हैं। इस माध्यम से यदि हमारे अन्दर विवेक, वैराग्य, षट्क सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व की प्राप्ति होती है तो हम उपासना में बहुत सफल होते हैं।

व्यवहार में वेद
परिष्कृत आत्मा : विनम्र शौर्य

– मुनि ऋतमा

अहंकारी व्यक्ति आग के धधकते गोले के समान है। वो स्वयं तो जलता ही है और जो उसके निकट आते हैं उनको भी जख्मी कर देता है। इसलिये अहंकारी व्यक्ति या तो अकेला रह जाता है या फिर उसके साथ जो भीड़ दिखायी देती है वो मित्र या शुभचिन्तकों की नहीं बल्कि स्वार्थियों, चापलूसों की होती है। ये भीड़ दिल से नहीं बल्कि दिमाग के साथ जुड़ी होती है, जयकारे लगाती है, लेकिन इनके साथ होने से और जयकारे भरने से, जय होने नहीं लगती। रावण का अन्त क्या नहीं हुआ?

तब, जब एक अहंकारी व्यक्ति सामने वाले को समझ नहीं पा रहा है और अपने दम्भ में दूसरे की विनम्रता को कमजोरी मान रहा है तो उसे बताना ही पड़ेगा कि ''भैया तुम गलत समझ रहे हो। हम भी कुछ हैं'' अन्यथा लोग महत्त्व नहीं समझते हैं।

आइये परशुराम जी की घटना से इस स्थिति व समाधान को समझने का प्रयास करें। राम ने शिव जी का धनुष क्या तोड़ा, मानो कि परशुराम का अहं टूटा। उन्हें अहं था कि इस कार्य को मेरे अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। जब राम ने ऐसा कर दिया तो वे तिलमिला उठे, क्योंकि उनकी मोनोपॉली खत्म हो गयी, शक्ति पर से एकाधिकार जाता हुआ दिखा। ऐसे में अपनी विशिष्टता बनाये रखने के लिये उनके सामने चुनौती थी। चुनौती ये कि यदि मुझे विशिष्ट (जो कि मैं अब तक था) ही बने रहना है तो जिसने शिव का धनुष तोड़ा है, उसे हराना होगा। परशुराम अत्यधिक गुस्से में थे और जब व्यक्ति अधिक गुस्से में होता है तो, अपना सन्तुलन भी खो देता है, फिर वो चाहे कितना भी क्यूँ न कहे, कि मैं ठीक हूँ, मुझे सब समझ आ रहा है, वह ठीक नहीं रहता है। परशुराम जी गुस्से में जनक जी से पूछते हैं–

'रे मूर्ख जनक! बता धनुष किसने तोड़ा? नहीं तो जहाँ तक तेरा राज्य है, वहाँ तक पृथ्वी उलट दूँगा।'

परशुराम जैसे ज्ञानी, ऋषि मुनि भला क्यों नाम पूछ रहे हैं? सीधी सी बात है आप उसे डाँटेंगे, क्रोध करेंगे, लड़ेंगे या मार डालेंगे। लेकिन धनुष तोड़ने वाले का क्या दोष? उस बेचारे ने क्या किया? उसने तो मात्र एक प्रतियोगिता में भाग लेकर उसमें सफलता प्राप्त की। यहाँ तक कि उस प्रतियोगिता में अन्य भी जितने शूरवीर भाग लेने आये उनका भी क्या दोष? यदि किसी का दोष है, तो राजा जनक का, क्योंकि कार्यक्रम के आयोजक तो वही थे, तो जो भी दण्ड देना था, जनक को देकर बात समाप्त की जाती। लेकिन नहीं, परशुराम ने ऐसा नहीं किया, उन्हें जनक से शिकायत नहीं है। उनके अहंकार को, शक्ति को चुनौती तो धनुष तोड़ने वाले से मिली है। उन्हें चिन्ता धनुष के टूटने की नहीं है, बल्कि अपने एकाधिकार वाले अहं के टूटने की है। इसीलिये तो वे एकाएक गुस्से में आ गये, बिना सत्य का परीक्षण किये, क्योंकि सत्य जानने की दरअसल उन्हें चाहत ही नहीं है, उन्हें तो अहं तुष्टि चाहिये थी। इसलिये वे आयोजक पर नहीं बल्कि प्रतियोगिता के विजेता पर क्रोधित हैं।

राम को परशुराम का ये व्यवहार अत्यन्त अविवेकपूर्ण लगा। गुस्से में ज्ञानी से ज्ञानी भी अविवेकी हो जाता है। फिर राम को ये भी बुरा लगा कि जीतने से पहले जिसके प्रति मन में प्रेम का भाव उदय हो चुका था, कार्य के समाप्त होते ही प्रिया (सीता) डर जाये! सहम जाये! स्वयं को ही अपराधी मानने लगे, तो फिर ये कैसे सहन होगा? तभी तो राम, लक्ष्मण को टोकते नहीं हैं, चाहते तो रोक सकते थे, पर राम ने ऐसा नहीं किया, बल्कि

सीता को डरी हुई देखकर, वे स्वयं परशुराम से बोले- ''शिव का धनुष तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा।'' ऐसा कहना राम के चरित्र और शौर्य के अनुकूल था। उन्होंने न तो कोई चोरी की थी, न कोई अपराध, फिर बताने में कैसा भय? वैसे यदि राम ये जानते कि मुझसे कोई अपराध हो गया है, तब भी वे स्वयं सामने आकर स्वीकार करने में तनिक देर न लगाते।

क्रोधी व्यक्ति विनम्रता शालीनता की भाषा को कहाँ समझता है। राम के विनम्र उत्तर से परशुराम शान्त, ठण्डे नहीं हुए, बल्कि और धधक उठे। उन्होंने प्रारम्भ से ही राम को गलत और अपराधी मान लिया, साथ ही उनकी विनम्रता को उनकी कमजोरी मान लिया। यदि आप किसी की सुने बिना व उस स्थिति को पूरा जाने बिना उसे अपराधी मान बैठे हैं, तब फिर सुनने से भी फर्क नहीं पड़ने वाला। वह तब भी आपकी दृष्टि में अपराधी ही रहेगा। इसलिये परशुराम को होश में लाने के लिये राम के लिये उस समय बेहद आवश्यक हो गया था कि अपने शौर्य की बात एक चुनौती के रूप में दोहरायें। अपना शौर्य बताना सदा ही आत्मश्लाघा नहीं होता। अपने सामने वाले के अहंकार को तोड़ने के लिये भी शौर्यगान करना आवश्यक होता है व उचित होता है। राम की यह तरकीब काम भी आयी और परशुराम को समझ आया कि यह कोई ऐरा-गैरा नहीं है। ज्ञात तो पहले से होगा, क्योंकि शिव का धनुष तोड़ने वाला कोई साधारण तो नहीं होगा, परन्तु हम अहंकारवश या अप्रिय समाचार सुनकर जब अपना होश खो बैठते हैं, तब घटना को समझने की समझदारी भी खो बैठते हैं।

परशुराम के साथ यही गड़बड़ हो गयी कि उनके ज्ञानपूर्ण, साधनायुक्त और त्यागपूर्ण जीवन पर आतंकित करने वाला, गुस्सैल पराक्रमी व्यक्तित्व हावी हो गया। कोई गुस्सैल हो, लेकिन शक्तिहीन हो तो चलेगा, क्योंकि गुस्सा करके वो कुछ ज्यादा बिगाड़ नहीं पायेगा, परन्तु परशुराम के साथ ऐसा नहीं था, उनकी शारीरिक शक्ति और अधिक बढ़ जाती थी। इसलिये उनसे डरना समझदारी थी, मूर्खता नहीं। दरअसल, हमारे व्यक्तित्व का एक बड़ा विचित्र पक्ष है, लोग हमारी इच्छा के बिना ही हमें कुछ का कुछ मानने लगते हैं। वास्तव में हम थोड़े से तो वो हैं, पर पूरे नहीं। हम उसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ हैं, लेकिन लोग हमारी पहचान हमारे एक पक्ष से करने लगते हैं और उस पर हमें खरा उतरने के लिये बाध्य करने लगते हैं। धीरे-धीरे हम स्वयं भी इसके शिकार हो जाते हैं। हमें लगने लगता है कि 'हाँ, मैं यही हूँ।' और हम जाने-अनजाने न चाहते हुए उसी तरह का व्यवहार करने लगते हैं। जैसी मुझसे अपेक्षा की जा रही होती है, मैं सचमुच वही बन जाता हूँ। अब यदि मैं चाहूँ भी कि इससे मुक्ति पा लूँ, तो कोई पाने नहीं देगा। फिर प्रयत्न करके देखिये, घोर अपमान, घर निकाला, समाज निकाला का आदेश हो जाता है और सबसे मुख्य बात ये है कि मेरे लिये ही उससे मुक्ति पाना सम्भव नहीं हो पाता है।

परन्तु राम अपनी विनम्रता, शान्ति, कोमलता की छवि के पीछे वीर, क्षत्रिय होने के तथ्य की जानकारी सदा याद रखते हैं और इस जानकारी का उपयोग किस समय, किसके सामने और किस प्रकार करना है ये भी अच्छी तरह से जानते हैं। बेवजह हर जगह अपने बारे में नगाड़ा नहीं पीटते, लेकिन अपनी बातों का सही तरीके से उपयोग करके परशुराम को अपना बना लेते हैं। राम का परशुराम के सामने अपना गुणगान करना किसी को दम्भ दिख सकता है, पर ये दम्भरहित वह रूप है जो वीरोचित है, मानवोचित, देवोचित वेदोचित ईश्वरोचित है, यथायोग्य है। यह वेदमार्ग है। तभी तो परशुराम जिन्हें (भगवान् कहकर भी सम्बोधित करते हैं।) राम के संवाद खत्म होते-होते, राम के प्रशंसक हो उठे और अपने द्वारा कहे अनुचित वचनों के लिये क्षमा याचना भी की।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़,
सागपुर, साबरकांठा (गुजरात)

कविता लिखना तक भी मित्रो....

- डॉ. रामवीर

कविता लिखना तक भी मित्रो
अब खतरे से नहीं है खाली,
सीधी सच्ची बात कहो तो
बदले में मिलती हैं गाली।

अप्रिय सत्य बोलने से तो
रूठती देखी है घर वाली,
फिर गैरों के रूठ जाने में
बात नहीं है अचरज वाली।

घर वाली तो घर की बात है
मान जाती है आखिर प्यारी,
लेकिन रूठे मित्र मनाना
काम कठिन है अतिशय भारी।

जब से दर्ज हुई कविता में
लोगों की करतूतें काली,
तब से कुछ जन खफा खफा हैं
मुख पर है गुस्से की लाली।

हम हैं व्यथित और विस्मित यह
कैसी चल निकली है प्रणाली,
गर्दभ भले घुसें बगिया में
पर न बोले बाग का माली।

जो हैं वाहवाही के भूखे
और पर्सनल्टी है जाली,
उन से देशोद्धार की आशा
करना भी है खामखयाली।

जिस पर बैठे हुए हैं वह ही
काटा करते हैं जो डाली,
उन की जो नियति होती है
वह सब की है देखी भाली।

चालाकी औ हेराफेरी
से भर लेना अपनी थाली,
कवि ने आज तलक जीवन में
ऐसी नहीं लालसा पाली।

जो भी जैसी बात है वैसी
हम ने कहने से न टाली,
कवि अपना कर्तव्य निभाता
लोग पड़े रहते हैं ठाली।

सत्य अर्थ प्रकाशित होवे
फैले नव प्रभात की लाली,
चिन्तन में निर्भ्रान्त बुद्धि हो
सब की ऋषि दयानन्द वाली।

८६, सैक्टर ४६, फरीदाबाद
(हरि.) - १२१०१०
चल. ९९११२६८१८६

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

श्रीराम - रामायण के आलोक में

श्री रामनिवास 'गुणग्राहक'

आदिकाव्य के विलक्षण विशेषण से विभूषित रामायण को परवर्ती कवियों के काव्यों की ऐसी कसौटी के रूप में जाना जाता है, जिस पर जब से लेकर अब तक एक भी काव्य खरा सिद्ध नहीं हो पाया। रामायण हर दृष्टि से सफलता का स्वयंसिद्ध साधन बनकर रह गया। रामायण के नामकरण से लेकर प्रत्येक श्लोक, प्रत्येक पद, तदनुस्यूत उपमाएं-अलंकार, कथ्यशैली के साथ-साथ रामायण के माध्यम से दिया गया सन्देश- सब कुछ अनुपम और अद्वितीय है। रामायण की रचना के पीछे अपने उद्देश्य को प्रकट करते हुए आदि कवि महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं- "**रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवत।**" अर्थात् रामायण के माध्यम से मैं आने वाली सन्तति को सन्देश देना चाहता हूँ कि वे अपना जीवन राम जैसा बनायें, न कि रावण जैसा। रामायण पढ़ने वाले, स्वयं को राम-भक्त कहने वालों के हृदय में श्रीराम जैसा जीवन जीने की इच्छाशक्ति अंगड़ाई लेने लगे तो मान लो कि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण ऐसे ही पराक्रमी पुरुषों के लिए रची है। रामायण महर्षि वाल्मीकि की कल्पना की उड़ान नहीं है, वह तो एक तत्कालीन महामानव के जीवन का सजीव सन्देश है। रामायण के प्रारम्भ में ही आता है कि तप और स्वाध्याय में प्रवर्त्तमान तपस्वी नारदजी के पास आकर वाल्मीकि जी ने कहा-

कोन्वास्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः।।

अर्थात् हे मुनिश्रेष्ठ नारद! वर्तमान में संसार में कौन ऐसा गुणवान् है, कौन ऐसा वीर्यवान्-पराक्रमी पुरुष है जो धर्मतत्त्व का जाननेवाला हो, कृतज्ञ हो, सत्य बोलने के व्रत का दृढ़ता से पालन करने वाला हो। आगे लिखा है- उत्तमचरित्र से युक्त, सब प्राणियों के हित में लगा रहने वाला विद्वान् कौन है? कौन सामर्थ्यवान् है और प्रियदर्शी कौन है? इसी प्रकार आत्मवान् क्रोध को जीतनेवाला, यशस्वी, अनिन्दक, जिसके रोष से देव भी भय खाते हों, स्वधर्म का रक्षक, स्वजनों की रक्षा करने वाला वेद वेदांगों के तत्त्व को जाननेवाला, धनुर्वेद में निष्ठा रखनेवाला, समाधिसिद्ध, सर्वशास्त्र निष्णात पुरुष कौन है? हे मुनि श्रेष्ठ इन दुर्लभ गुणों से युक्त पुरुष के बारे में जानने की मेरी बड़ी प्रबल इच्छा है। आप इन गुणों से युक्त पुरुष के बारे में बताने में समर्थ हैं, कृपा करके बताइये! वाल्मीकि के शब्द है- '**ज्ञातुं एवं विधं नरम्**' अर्थात् आप इन दुर्लभ गुणों से युक्त नर के बारे मे जानने में समर्थ हैं। वाल्मीकि के इन वचनों को सुनकर नारदजी कहते हैं-

"इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।"

हे ऋषिवर! लोक प्रसिद्ध इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न राम ही ऐसा महापराक्रमी वीर पुरुष हैं, जो आत्मसंयमी, महायशस्वी, धैर्यवान् और मन-इन्द्रिय आदि को वश में रखनेवाले हैं। वाल्मीकि रामायण के शब्दों- "**इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम**" पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो रहा है कि श्रीराम इक्ष्वाकु के वंश में जन्मे थे। नारद पुनः कहते हैं-

"बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।
मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः।।"

हे मुनिवर! आपके द्वारा जिन अत्यन्त दुर्लभ गुणों के बारे में कहा गया है, मैं उन दुर्लभ गुणों से युक्त नर के बारे में आपको बताता हूँ। जब वाल्मीकि ने पूछा- '**ज्ञातुं एवं विधं नरम्**' अर्थात् इन गुणों से युक्त नर-मनुष्य के बारे में पूछा तो नारद ने बताया- "**इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम**" के साथ- '**तैर्युक्तः श्रूयतां नरः**' का प्रयोग घोषणा कर रहा है कि दोनों की मनोभावना किसी वर्तमान मनुष्य के बारे में कहने-सुनने की है। इस तथ्य

को हृदय में रखकर- श्रीराम के जीवन का पठन-पाठन किया जाए तो हृदय के किसी कोने में राम जैसा बनने की इच्छा अवश्य उत्पन्न होगी। वाल्मीकि भी यही चाहते थे कि रामायण को पढ़कर आनेवाली सन्तति श्रीराम जैसा जीवन जीने का प्रयास करे। प्रसंगवश श्रीकृष्ण की भी बात कर लें तो वे भी गीता में यही बोलते हैं,

'मद्भक्तं एतद्विज्ञाय मद्भावाय उपपद्यते'

गीता १३.१८

अर्थात् मेरे भक्त कहलानेवाले यह जान लें कि वे मेरे भावों को प्राप्त हों, मेरे जैसा जीवन जीने का संकल्प लें। गीता और रामायाण दोनों का मूल सन्देश यही है कि श्रीराम और श्रीकृष्ण का जीवन-आदर्श हमें अपने जीवन में धारण करना चाहिए इन महामानवों के उदात्त-मानवीय गुणों को अपने जीवन में स्वीकार करना, अपने व्यवहार का अंग बनाना ही रामायण और गीता के पढ़ने की सार्थकता है। महर्षि वाल्मीकि तो स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा कर ही रहे हैं। गीता को केवल युद्ध विषयक उपदेश मानना बहुत बड़ी भूल होगी। पारिवारिक सम्बन्धों में अपनेपन का जो अनुपम आदर्श गीता में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। पारिवारिक धर्मानुष्ठान के रूप में यज्ञ की लोक-परलोक साधक उपयोगिता से लेकर आत्मोन्नति के लिए ईश्वर, जीव प्रकृति के यथार्थ ज्ञान की अनिवार्यता, भक्ति का स्वरूप और भक्त योगी का व्यावहारिक जीवन कैसा हो, इन सब विषयों पर सतर्क-सटीक व्यवस्था देने वाली गीता जीवन के प्राय: सभी पक्षों पर हमारा मार्गदर्शन करती हुई दिखती है।

रामायण की बात करें तो आदि काव्य के साथ काव्य के समग्र गुण-धर्मों के मापदण्डों का सर्वोच्च मानक होने के कारण परवर्ती काव्य कृतियों में अंगुलिगण्य काव्यों में रामायण की छाया स्पष्ट दिखती है, साथ ही इसके कतिपय प्रसंगों की चर्चा भी बहुलांश में मिलती है। महाभारत जैसे ऐतिहासिक महाकाव्य में चार स्थलों रामोपाख्यान, आरण्यक पर्व, द्रोणपर्व तथा शान्तिपर्व में रामायण का उल्लेख है। बौद्ध साहित्य की बात करें तो दशरथ जातक, अनाम जातक और दशरथ कथानक रामायण प्रसूत हैं। जैन साहित्य में तो श्रीराम को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। विमल सूरिकृत-पउम चरित, (प्राकृत) रविषेण आचार्यकृत-पदमपुराण (संस्कृत), स्वयम्भूकृत-पउम चरिउ (अपभ्रंश) गुणभद्रकृत- उत्तर पुराण, संस्कृत आदि ग्रन्थ-श्री राम और रामयण की लोकप्रियता एवं सर्वस्वीकार्यता के स्वयं सिद्ध प्रमाण हैं। श्रीराम और रामायण के राष्ट्रव्यापी छवि का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि मराठी भाषा में आठ रामकथाएं, तेलगू में-५, तमिल में-१२, हिन्दी में-१, बंगला में-२५ और उड़िया में-६ मिलती हैं। देश की सीमाओं के बाहर चलें तो अंग्रेजी, जर्मन, व रसियन आदि भाषाओं में रामायण का अनुवाद मिलता है। इतना ही नहीं थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक के संग्रहालय के सामने श्रीराम की अष्टधातु की धनुर्धारी प्रतिमा लगी हुई है। थाइलैण्ड में तो अयोध्यापुरी और मिथिलापुरी भी है। रामायण के प्रति हमारे हृदय में लगाव ही था कि उदयपुर के महाराजा जगतसिंह ने सम्वत्-१७०३ में जैन साधु सोमदेव सूरि से एक ऐसी विलक्षण रामायण लिखाकर तैयार कराई, जिसके एक पृष्ठ पर अर्थ सहित श्लोक लिखे थे और उसके सामने के पृष्ठ पर उसी वर्ण्य विषयवस्तु पर आधारित सुन्दर रंगीन चित्र हैं! यह रामायण चार खण्डों में तैयार हुई, जिसके हर खण्ड़ का वजन लगभग २० किलो है। आज यह रामायण लन्दन के ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालय की शोभा बढ़ा रही है, लुटेरे अंग्रेजों ने हमारी इस साहित्यिक विरासत को भी लूट लिया।

मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले श्रीराम के प्रामाणिक व आदर्श जीवन चरित्र का समुचित सुपरिचय देने वाला आदि काव्य रामायण इतना लोकप्रिय व सर्वस्वीकार्य क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर पूर्व प्रस्तुत रामायण के कतिपय प्रारम्भिक वचन भली भाँति दे देते हैं। देव-दुर्लभ सद्गुणों से सुशोभित -श्रीराम का जीवन यदि

महर्षि वाल्मीकि जैसे काव्य कला के मानक कवि की सरस, सुबोध, सुललित लेखनी में अनुस्यूत किया जाए तो यह मणि-कांचन संयोग भला किस सुपठित सज्जन के हृदय को आकर्षित न कर सकेगा। श्रीराम के समग्र सद्गुणों का संक्षिप्त परिचय केवल तीन शब्दों में देने का काव्य-कौशल वाल्मीकि के अतिरिक्त कहाँ मिलेगा? वाल्मीकि लिखते हैं **''रामो विग्रहवान् धर्म''** अर्थात् राम मूर्तिमान धर्म हैं। सरल शब्दों में कहें तो वाल्मीकि कहते है कि धर्म का साकार रूप देखना है तो वह राम है।

गगनं गगनाकारं सागरं सागरोपमः।
उपमानं तु रामस्य राम एव न संशयः।।

अर्थात् जैसे आकाश की उपमा आकाश से और सागर की सागर से ही दी जा सकती है, अन्य से नहीं। वैसे ही राम की उपमा राम ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं। धर्म का साकार रूप माने जाने वाले श्रीराम की उपमा तब से लेकर अब किसी के भी साथ सम्भव नहीं दिखी। श्रीराम वेद वेदांग तत्त्वज्ञ थे, धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने वाले थे, **'रक्षिता स्वस्य धर्मस्य'** अपने धर्म की रक्षा करने वाले थे। श्रीराम चरित्रवान थे, आत्मवान् थे, क्रोध को जीतने वाले नियतात्मा थे, अपने व्रतों पर दृढ़ रहने वाले थे। इन्हीं दुर्लभ गुणों के कारण वाल्मीकि जैसे सत्यवक्ता ऋषि श्रीराम को धर्म का साकार रूप बताते हैं। धर्म का साक्षात् स्वरूप होने के कारण ही वाल्मीकि आने वाली पीढ़ियों को श्रीराम जैसा जीवन जीने की प्रबल प्रेरणा करते हैं। महाभारत काल तक महापुरुषों के आदर्श चरित्र को व्यवहार में धारण करने की पावन परम्परा के दर्शन होते हैं। श्रीकृष्ण की घोषणा

''यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत् तत् एव इतरो जनः''

इसी प्रवृत्ति की परिचायक है। महाभारत के बाद पता नहीं इस देश की चेतना-संवेदना और श्रेष्ठानुकरण की प्रवृत्ति को कौन सा भयंकर रोग लग गया कि महापुरुषों को आचरण के स्थान से हटाकर पूजा की वस्तु बना दिया गया। अपने जीवन आदर्शों को पूजा की वस्तु बना देने का कुफल देश में दो प्रकार से दुःख व दुर्गति का कारण बना। श्रीराम और श्रीकृष्ण से प्रारम्भ की गई यह आदर्शों को पूजा की वस्तु बनने की प्रवृत्ति ने महात्मा बुद्ध और शंकराचार्य तक को लपेट लिया। लगता है हमने यह मान लिया है कि धर्म पर चलकर पीड़ित मानवता की सेवा करना, जन कल्याण व लोकोपकार में जीवन लगाना, संयम-सदाचारपूर्वक आत्मोन्नति करना मानव की सामर्थ्य में रहा ही नहीं। कोई ऐसा करता दिखा तो हमने उसे परमात्मा घोषित करने में तनिक भी देर न लगाई। इस दुष्प्रवृत्ति ने देश को आदर्श महापुरुषों से शून्य कर दिया। परिणामतः- **'हतो यस्य आदर्शाः सा हतः इति विजानन्ति सुधियः'** के अनुसार आदर्शहीन होकर हम जीवन से हीन होकर रह गये। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अन्धविश्वासी होकर भारत सामाजिक दृष्टि से टुकड़ों में बिखर गया तथा राजनैतिक दृष्टि से सैकड़ों वर्षों तक मुसलमान व ईसाई जैसे क्रूर व कुटिल लोगों के पददलित होकर रहा।

दूसरे ढंग से देखें तो हमारी इसी सोच का दोहन करने वाले कुछ धूर्त लोग स्वयं को ईश्वर बताने लग गये। जब हमारी धर्मभीरू जनता ने श्रीराम व श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों को परमात्मा मान लिया तो उन्हीं के जैसे शरीरधारी आसाराम, रामरहीम व रामपालदास जैसे लोगों को भगवान् मानने में कोई बड़ी समस्या नहीं आई। हाँ, वे उनके सम्मान सद्गुण सम्पन्न नहीं, सदाचार, सच्चरित्र और सद्विचारों से युक्त नहीं तो क्या हुआ। उनके तथाकथित भक्तगण अपनी अन्धश्रद्धा से इन सबकी पूर्ति कर देते हैं। आपको उनमें ईश्वरीय गुण नहीं दिखते तो यह आपकी समस्या है, लाखों लोगों को तो वे साक्षात् ईश्वर दिखते हैं। भरोसा न हो तो आसाराम, रामरहीम के किसी भक्त से पूछकर देखो! सन् १९५४ में एक व्यक्ति ने अपना नाम 'स्वामी हंस महाराज रखकर स्वयं को श्रीकृष्ण का अवतार घोषित कर दिया। इसकी पत्नी को 'जगत् जननी' का गौरव मिला। इनका बड़ा पुत्र

सत्यपाल- 'बाल-भगवान्' बन गया। दूसरा पुत्र महिपाल- 'शंकर' का अवतार और तीसरा धर्मपाल- प्रजापति ब्रह्म का अवतार घोषित किया गया और चौथा प्रेमपाल- 'बाल योगेश्वर' बनकर लीला करने लगा। इसने ढाई-तीन वर्ष की आयु में पहला प्रवचन देते हुए ही स्वयं को कह दिया 'मैं ईश्वर हूँ।' इसके भक्त कहते हैं- 'जिस शक्ति ने संसार की रचना की है, वह शक्ति साक्षात् रूप में श्री बालयोगेश्वर नाम से प्रसिद्ध है।' सनातन धर्म के प्रसिद्ध लेखक भक्त रामशरणदास ने लिखा था- ''भारत में लगभग ढाई सौ से अधिक अवतार हैं, मैं सैकड़ों अवतारों से भेंट कर चुका हूँ।'' मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा था कि जब तक संसार में मूर्ख रहेंगे, धूर्तों का राज चलता रहेगा। महापुरुषों को अवतार घोषित करके पूजा की वस्तु बना देने की मूर्खता ने ही ऐसे धूर्तों की टोली खड़ी कर दी जो स्वयं भगवान् बताकर अपनी पूजा करा रहे हैं।

हम लेख के प्रारम्भ में ही वाल्मीकि रामायण के श्लोक प्रमाण रूप में देकर दिखा चुके हैं कि श्रीराम मनुष्य थे। नारदमुनि और वाल्मीकि के वार्तालाप में लगभग १५-२० शब्द ऐसे हैं, जो श्रीराम के महामानव होने की घोषणा कर रहे हैं। वाल्मीकि जब स्वयं हमें श्रीराम जैसा जीवन जीने की प्रेरणा कर रहे हैं, तब हमें श्रीराम को पूजा की वस्तु बना देने से बचना चाहिए। श्रीराम हमारे जीवन-आदर्श हैं, धर्म के साकार रूप हैं। रामायण-वर्णित श्रीराम के मानवी गुणों की एक झलक पाठकों के लिए प्रस्तुत करना हमें सर्वथा उचित प्रतीत होता है, ताकि हम उनके गुण गौरव को वाल्मीकि के ही शब्दों में जान सकें और स्वयं को श्रीराम का सच्चा भक्त बना सकें। मानव के जीवन में सत्य को सर्वोपरि माना जाता है। मनु जी के शब्दों में- **'न सत्यात् परोधर्मः'** अर्थात् सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं। व्यास जी की घोषणा- **''सत्यात् उत्पन्नं धर्मम्''** कि धर्म सत्य से ही उत्पन्न होता है भी इसका समर्थन करती है। महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में लिखते हैं-

''यो ह वै धर्मः सत्यं वैतत्'' (१४.४.३.२६)

अर्थात् जो धर्म है, वह सत्य ही है। धर्म का साकार रूप कहे जाने वाले श्रीराम के जीवन में सत्य के प्रति कितनी गहरी और व्यापक निष्ठा थी, इसका प्रमाण तब मिलता है, जब कैकेई के सामने श्रीराम घोषणा करते हैं- **''रामो द्विर्नाभिभाषते''** माँ! राम दो-बार नहीं बोलता। श्रीराम का सच्चा भक्त वही है जो उनके पदचिह्नों पर चलता हुआ सत्य को जीवन का इतना सशक्त आधार बना ले कि उसे विश्वास दिलाने के लिए दो बार न बोलना पड़े।

श्रीराम का पारिवारिक जीवन अपनेपन का अनुपम आदर्श है। एक पुत्र के रूप में माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए राज को त्यागकर वन का वरण करके श्रीराम ने जो उच्च आदर्श स्थापित किया, वह आज तक श्रीराम के ही नाम है। भाई के रूप में देखें तो श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा था-

''धर्मं अर्थं च कामं च, पृथ्वीं चापि लक्ष्मण।
इच्छामि भवतामर्थे, एतत् प्रति वदामि ते।।
यद् विना भरतं त्वां च, शत्रुघ्न वाऽपि मानवाः।
भवेन्मम सुखं किञ्चित्, भस्मं तत् कुरुतां शिखी।''

हे लक्ष्मण! धर्म, अर्थ व कामादि से लेकर राज्य आदि की मेरी जो भी इच्छा है, वह सब आप सबके लिए ही है। यदि भरत, शत्रुघ्न आदि परिजनों व तुम्हारे बिना मुझे कोई सुख मिले तो मैं उसे आग लगाकर भस्म कर दूँगा। यह है श्रीराम का भाइयों और परिवार के प्रति अगाध प्रेम। चित्रकूट में रहते हुए जब भरत श्रीराम से मिलने जा रहे थे तो लक्ष्मण ने कुछ अनिष्ट की आशंका प्रकट की। वहाँ श्रीराम का भरत के प्रति अटूट विश्वास कुछ यूँ प्रकट होता है।

स्नेहेन आक्रान्त हृदय, शोकेन कुलितेन्द्रियः।
द्रष्टुं अभ्यागतो हि एष, भरतो नान्यथागतः।।

हे लक्ष्मण! तुम देखना कि मेरे स्नेह से तड़पता

हृदय और शोक से व्याकुल इन्द्रियों के साथ ही भरत यहाँ आ रहा है, अन्य कोई भाव उसके हृदय में आ ही नहीं सकता। लक्ष्मण के लिए तो श्रीराम कहते हैं कि यह मेरा बाहर विचरण करने वाला प्राण है।

पाठक वृन्द! श्रीराम के इस आदर्श को जीने की आज महती आवश्यकता है। हमारे परिवार टूट रहे हैं, अपनापन देखने को नहीं मिलता। बड़ों के लिए आदर-सम्मान व छोटों के लिए सच्चा स्नेह समाप्तप्राय है। रामभक्तों के हृदय में श्रीराम के इस भ्रातृप्रेम को अंकुरित करना ही पड़ेगा, सम्मान व स्नेह से शून्य हृदय निष्ठुरता व निर्दयता का पर्याय मात्र रह जाता है। श्रीराम का एक अनुपम व अनूठा आदर्श तब सामने आता है जब वन जाते हुए रात्रि विश्राम के समय निषाद्राज गुह भोजन लेकर आता है। तब भोजन ग्रहण किये बिना भी कृतज्ञ भाव से श्रीराम जो उत्तर देते हैं, वह मानवीय सद्भाव की पराकाष्ठा है। श्रीराम कहते हैं-

''नहि अस्माभि प्रतिग्राह्यं सखे देयं च सर्वदा।''

हे मित्र! हमने सदा दिया ही है, लिया कभी नहीं है, इसलिए हम यह ग्रहण नहीं कर सकते! श्रीराम का कैसा निर्मल, निश्छल व सद्भावों से परिपूर्ण हृदय यहाँ जिस सरलता व सहजता से मुखरित होता दिखता है, वह अन्यत्र अनुपलब्ध है।

रावण वध के बाद उसके अन्तिम संस्कार का प्रश्न खड़ा हुआ तो विभीषण संकोचवश आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। तब श्रीराम के हृदय का वह उज्ज्वल पक्ष प्रकट हुआ, जिसके लिए वेद का आदेश है

''भद्रं मन कृणुष्व वृत्रतूर्ये'' यजु. १५.३९)

अर्थात् अन्याय के विरुद्ध युद्ध करते हुए मन को कल्याणकारी ही रखें। मन में राग-द्वेष, वैर भाव को न आने दें। वेद के इस ईश्वरीय आदेश का जितनी उत्तमता से श्रीराम ने अनुपालन किया, वैसा प्राप्त इतिहास में अनुपलब्ध है। श्रीराम ने तब विभीषण को कहा-

''मरणान्तानि वैराणि, निवृतं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येषा यथा तव।।''

हे विभीषण! रावण के मरने के साथ ही हमारा वैर भी मर गया। हमारा प्रयोजन सीता को पाना था, वह भी पूर्ण हुआ। अब तुम निःसंकोच होकर इसका अन्तिम संस्कार करो, अब तो यह जैसा तुम्हारे लिए है, वैसा ही मेरे लिए भी है। रावण विभीषण का भाई था,। श्रीराम की पत्नी सीता का छलपूर्वक हरण करने और लाख समझाने पर भी न लौटाने वाले रावण के साथ युद्ध करते हुए प्राणोपम भाई लक्ष्मण मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया था। ऐसे दुर्दान्त शत्रु के लिए-**'मम अपि एष यथा तव'** श्रीराम ही कह सकते हैं। इसलिए वाल्मीकि को कहना पड़ा- **''राम रावणं युद्ध रामरावणयोरिव''**- राम रावण का युद्ध तो राम रावण के युद्ध जैसा ही था। ऐसे महामानव को पूजा की वस्तु से उठाकर आचरण के योग्य आदर्श पुरुष बनाने के लिए सबको शक्तिशः प्रयास करना ही चाहिए, ऐसा करना ही पड़ेगा।

ग्राम- सूरौता, भरतपुर। मो. ९०७९०३९०८८

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय का पुनः आरम्भ २६ अगस्त को किया गया है। यह चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें। **-मन्त्री**

संस्था समाचार

जैसा कि सर्वविदित है महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी सभा ऋषि उद्यान में बहुत वर्षों से प्रतिदिन सुबह-शाम यज्ञ प्रवचन आदि होते रहते हैं। ऋषि उद्यान में अतिथि विद्वानों का भी आगमन सतत होता रहता है। इसी क्रम में आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी का आगमन हुआ। आपने बताया कि आप अपनी कमाई से १०० से अधिक देशों में जाकर वहाँ के बच्चों को वैदिक ज्ञान दिया है। संकल्प व्रत लेकर कर्म करने वाला प्राणी जीवन में निराश नहीं होता। जो थककर बैठ जाते हैं उन्हें मंजिल नहीं मिलती। विद्या ईश्वरकृत् शिक्षा है। लौकिक शिक्षा संसार में बाँधती है। तृप्ति शान्ति का कारण है और लिप्ती दु:ख का कारण है। जो पुरुष श्रेष्ठ पवित्र बनकर अहंकाररहित होकर परोपकार आदि कार्यों को करते हैं वे संसार बंधन से छूट जाते हैं।

सभा मंत्री मुनि सत्यजित् जी ने ऋग्वेद के ७/५७/१ मंत्र के आधार पर बताया कि वायु के दो गुण हैं- सभी क्रियाओं को प्रेरित करना और धारण करना। यदि वायु न हो तो अग्नि नहीं जलेगी। वायु, पृथ्वी आदि लोकों को धारण करके रखती है। धारण का कारण है इनकी गति। यदि पृथ्वी आदि में गति ना हो तो वे आपस में मिल जाएंगे। अग्नि से जल गर्म हो जाएगा पर वायु न हो तो ऊपर की ओर नहीं उठेगा। वायु बादल को इधर-उधर ले जाती है। इसी प्रकार मनुष्य भी वायु अग्नि आदि के प्रयोग से आनन्द युक्त रहे। अर्थात् इनके प्रयोग से यन्त्र आदि बनाकर उनका उचित प्रयोग करके हमें सुखी होना चाहिए। यन्त्रों के प्रयोग से समय की बचत होगी और उस बचे हुए समय का हम साधना आदि में प्रयोग करके जीवन को उन्नत कर सकते हैं।

आचार्य शक्तिनन्दन ने गीता के श्लोकों के माध्यम से बताया कि जब हम कभी निराश हो जाएं तो हमें इन श्लोकों पर विचार करना चाहिए। विपरीत परिस्थिति आते ही अपना धैर्य नहीं टूटना चाहिए। यह विचार करना चाहिए कि यह कर्म हमें अपयश देने वाला हो सकता है। मेरा सामर्थ्य क्या है? अपने आप को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। साथ ही विश्व पुस्तक मेले में हुए अपने अनुभवों को भी बताया कि कुछ लोग जिज्ञासु भाव से आते हैं कुछ लोग केवल समय पास करने के लिए आते हैं और कुछ खिंचाई करने की दृष्टि से आते हैं तथा कुछ मनोरंजन के लिए आते हैं। आपने कुछ लोगों की शंकाओं का समाधान भी किया।

आचार्य कर्मवीर जी ने ६ मार्च को धर्मवीर पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर उनकी जीवनी को बताया। आपने बताया कि पंडित लेखराम जी का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ पर उनका स्वभाव क्षत्रिय था। उनके दादाजी महाराजा रणजीत सिंह के सिख सेनापति हरिसिंह नलवा के साथ रहे। इसलिए आपको स्वभाविक रूप से विरासत में शौर्य और भक्ति मिली थी। आप भी पुलिस विभाग में नियुक्त हुए पर एक अंग्रेज अधिकारी के कुछ कहने से आपने पुलिस की नौकरी छोड़ दी। आपके एक मित्र वेदान्ती थे। आप भी पहले वेदान्ती बन गए। पर कहीं से सत्यार्थप्रकाश पढ़कर आप आर्यसमाजी बने और अपने सभी मित्रों को भी आर्यसमाजी बनाया। स्वयं अजमेर आकर स्वामी दयानन्द जी से आपने शंका समाधान किया और उनसे प्रेरणा लेकर के आपने घर वापसी आन्दोलन शुरू किया और बहुत ही शास्त्रार्थ करते रहे। एक बार कहीं बहुत सारे हिन्दू मुसलमान बनने वाले थे। उस समय आपका पुत्र बीमार था। लेकिन फिर भी आप उन सभी को विधर्मी होने से बचाने के लिए चल पड़े। रेलगाड़ी उस स्टेशन पर रुकती नहीं थी। आपने अपने सामान को पीठ पर बांधकर चलती गाड़ी से छलांग लगा दी और शास्त्रार्थ स्थल पर पहुँचकर उन सभी को विधर्मी होने से बचाया। आपकी एक मुसलमान युवक ने छद्मवेश धारण कर छूरा मार कर हत्या कर दी।

ऋषि उद्यान में होली बड़े ही हर्षोल्लास के साथ यज्ञ कर एक-दूसरे के ऊपर फूलों की वर्षा करते हुए मनाई गई। संचालक श्रीमान् वासुदेव जी थे। इस कार्यक्रम में श्रीमती पुष्पलता, श्री जयदेव, श्री कृष्ण गोपाल, श्री विशोका मुनि, श्रीमती कुमुदिनी, श्रीमती पवित्रा, श्री शान्तिदेव, श्री आदित्य मुनि, श्रीमान् वासुदेव, ब्र. सुभाष, आचार्य रणजीत, आचार्य मनोजित्, मुनि सत्यव्रत आदि के भजन व प्रवचन हुआ। इनमें कुछ लोगों ने राजस्थानी में भी भजन गाए। अन्त में सभी के लिए सामूहिक प्रीतिभोज रखा गया। जिसमें श्री जगदीश, श्रीमान् वासुदेव, श्री आदित्य मुनि ने सहयोग किया। इसमें अजमेरवासी आर्य सज्जन, अतिथि महानुभाव, आश्रमवासी गुरुकुल के आचार्य व ब्रह्मचारीगण सोत्साह सम्मिलित हुए।

महर्षि दयानन्द जी की द्विजन्मशताब्दी समारोह को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भव्य ऋषि मेला के रूप में परोपकारिणी सभा व भारत सरकार का संस्कृति मन्त्रालय के साथ मिलकर मनाने के विषय में परोपकारिणी सभा के सदस्यों की दो दिवसीय बैठक हुई। जिसमें कुछ सदस्य गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन भी उपस्थित हुए। इसमें विभिन्न प्रकार की समितियां बनी। जो विभिन्न कार्यों को देखेगी। यह कार्यक्रम अक्टूबर १७,१८,१९, २० को २०२४ में होगा।

श्रीमान् मनोहर आर्य के पौत्र शिवांश सुपुत्र श्री धर्मपाल शास्त्री व श्रीमती पूनम का नामकरण व निष्क्रमण, अन्नप्राशन संस्कार आचार्य कर्मवीर जी के ब्रह्मात्व व ब्रह्मचारी आकाश के पौरोहित्य में सपरिवार सोल्लास सम्पन्न हुआ। – **आचार्य ज्ञानचन्द्र**

विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली- २०२३

विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली- २०२३ में हजारों प्रबुद्ध गैर-आर्यसमाजी सज्जनों के लिए परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी) की ३००० प्रतियां, सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी) की १००० प्रतियां, आर्याभिविनय की १००० प्रतियां, और आर्योद्देश्यरत्नमाला की १००० प्रतियां निःशुल्क वितरित की गई।

प्रचार की दृष्टि से विश्व पुस्तक मेला एक बहुत अच्छा मंच रहा। हजारों प्रबुद्ध लोगों तक हमारी पहुँच हो पाई। अनेक आर्यसमाजियों ने आपनी सुखद प्रतिक्रिया दी कि जब वे मेले में गैर-आर्यसमाजियों के पास हमारे द्वारा वितरित सत्यार्थ प्रकाश देखते थे तो प्रसन्नता का अनुभव करते थे।

मेले में समय-समय पर स्वामी विष्वङ्, डॉ. वेदपाल, सभा प्रधान श्री सत्यानन्द, श्रीमान् शत्रुघ्न, श्रीमान् महेन्द्र आर्य, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. योगानन्द शास्त्री आदि सभा अधिकारियों का साक्षात् सानिध्य मिला।

स्वामी शान्तानन्द आचार्य भद्रकाम जी वर्णी, अंकुर आर्य (सत्य सनातन यूट्यूब चैनल) राहुल आर्य (थैंक्स भारत यूट्यूब चैनल) आदि आर्यजनों की भी समय समय पर उपस्थिति रही।

स्टॉल संचालन में मुनि सत्यव्रत, आचार्य मनोजित्, आचार्य शक्तिनन्दन, श्री दीपक आर्य, आशीष आर्य, सभा कर्मचारी श्री सम्पत का सहयोग रहा।

सभा के वेदभाष्य आदि साहित्य की विशुद्धता के प्रति लोगों की श्रद्धा है, श्रद्धालु जन इसे खरीदने के लिए लालायित दिखे।

वेदभाष्य के सेट शीघ्र ही बिक गए। लोगों को ऑर्डर बुक करने के लिए प्रेरित भी किया। सभा की पुस्तक सूची दूरभाष संख्या आदि दे दी है।

विश्व पुस्तक मेला
हॉल नं-२, शॉप नं.- १२८
२५ फरवरी से ५ मार्च २०२३
श्री दीपक आर्य

परोपकारिणी सभा एवं वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
०१.	ऋग्वेद संहिता (वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द)	५००.००
०२.	यजुर्वेद संहिता (वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द)	१८०.००
०३.	सामवेद संहिता (वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द)	२५०.००
०४.	अथर्ववेद संहिता (वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द)	४००.००
०५.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
०६.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	४००.००
०७.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	४००.००
०८.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	४००.००
०९.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
१०.	ऋग्वेदभाष्य पांचवाँ भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	
११.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	४००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	
१४.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	२००.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	अनुपलब्ध
१७.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	अनुपलब्ध
१८.	ऋग्वेदभाष्य नवम् मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३००.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य नवम् मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३००.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२१.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	४००.००
२२.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
२३.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	४००.००
२४.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
२५.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग सजिल्द (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	३००.००
२६.	ऋग्वेद का नमूना भाष्य (एक मन्त्र)	४.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	

२७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	अनुपलब्ध
२८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग सजिल्द	२००.००
२९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग सजिल्द	३५.००
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग सजिल्द	३५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग सजिल्द	२५.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग सजिल्द	३०.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग सजिल्द	३०.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग सजिल्द	५०.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग सजिल्द	५०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग सजिल्द	२५.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल सजिल्द	अनुपलब्ध
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल सजिल्द	अनुपलब्ध
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	५०.००
४२.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग सजिल्द	१००.००
४३.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग सजिल्द	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४४.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४५.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	६००.००

प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार

४६.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग = एक सेट	१५००.००

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थ

सिद्धान्त ग्रन्थ

४७.	दयानन्द ग्रन्थमाला (तीन खण्ड का १ सेट)	७५०.००
४८.	सत्यार्थप्रकाश अजिल्द	१००.००
४९.	सत्यार्थप्रकाश सजिल्द	१५०.००
५०.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	१५०.००
५१.	आर्याभिविनय	३०.००
५२.	आर्याभिविनय गुटका अजिल्द	७.००
५३.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००

(परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित)

योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर

(स्वामी विष्वङ्जी परिव्राजक के सान्निध्य में)

संवत् २०८०, आषाढ़ कृष्ण अष्टमी से अमावस्या तक, तदनुसार ११ से १८ जून २०२३

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक शिविरार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
३. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
४. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
५. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
६. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
७. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
८. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
९. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२९४८६९८, मो. ९३१४३९४४२१) से सम्पर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार अतिरिक्त भुगतान से की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गम्भीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर

देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क २००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क २००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर **दूरभाष :** ०१४५-२९४८६९८, मो.नं. ९३१४३९४४२१

– : मार्ग : –

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर

स्थान - ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान

आर्य वीर दल शिविर - दिनांक - १४ से २१ मई २०२३ तक

आर्य वीरांगना दल शिविर - दिनांक - १९ से २५ जून २०२३ तक

सभी आर्य वीरों व वीरांगनाओं को नमस्ते। आप सभी को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर व आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित किया जाएगा ।

शिविर की विशेषता - १- शिविर आर्यवीर दल अजमेर एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा । इसमें राष्ट्रीय स्तर के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा।

२- शिविर में सहयोग राशि ५००/- रुपये रहेगी।

३- सभी को गणवेश में रहना अनिवार्य होगा । गणवेश यदि उपलब्ध नहीं है तो शिविर स्थल से क्रय कर सकते हैं।

४- इस शिविर में सैनिक शिक्षा का विशेष प्रशिक्षण होगा।

५- आर्य वीर शिविर स्थल पर १३ मई २०२३ व आर्य वीरांगना शिविर में १८ जून २०२३ को रात्रि तक आना अनिवार्य है।

६- शिविर में भाग लेने वाले आर्य वीर अपनी आने की सूचना **श्री कमलेश पुरोहित** को चलभाष संख्या ९८२८१८०१९७ एवं आर्य वीरांगना की सूचना **श्रीमती सुलक्षणा शर्मा** को चलभाष संख्या ९४१३६९५४८९ पर अवश्य देवें । धन्यवाद ।

विश्वास पारीक-जिला संचालक-९४६००१६५९०

आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल अजमेर

परोपकारिणी सभा, अजमेर

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

१. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर - डाक व्यय - १०००/-

२. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक - डाक व्यय - ५००/-

३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर - डाक व्यय - १००/-

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।

शुल्क वृद्धि की सूचना

परोपकारी के पाठकों बडे भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि कागज के मूल्य और छपाई के अन्य साधनों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जनवरी 2023 से सदस्यता शुल्क बढाना पड रहा है। बढी हुई दरें इस प्रकार से हैं -

भारत में

एक वर्ष -	400/-	पांच वर्ष -	1500/-
आजीवन (20 वर्ष) -	6000/-	एक प्रति -	20/-

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। **आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।**

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से २८ फरवरी २०२३ तक)

१. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली २. कर्नल अनिल सिंहल, नई दिल्ली ३. श्री तेजवीर सिंह, नई दिल्ली ४. श्री रामलाल हरचन्दानी, सरदार शहर ५. श्री लालाराम, जयपुर ६. श्री गुलाबचन्द जयसवाल, महू ७. श्रीमती ऋतु माथुर, अजमेर ८. आर्यसमाज मन्दिर, कुरुक्षेत्र ९. श्री प्रवेश कुमार, चरखीदादरी १०. श्री उत्कर्ष सरीन, अजमेर ११. श्री स्वर्ण सरीन, दिल्ली।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(१६ से २८ फरवरी २०२३ तक)

१. श्री आदित्य अग्रवाल, जालन्धर केन्ट २. श्री स्वास्तिक, नेपाल ३. स्वामी योगानन्द, गुजरात ४. डॉ. अश्विनी कुमार गुप्ता, अजमेर ५. श्री रामप्रसाद, सराधना, अजमेर ६. श्री विवेकानन्द सन्ताराम साधवानी, कोल्हापुर ७. श्रीमती रीमा व श्री विवेकानन्द साधवानी, कोल्हापुर ८. श्री किशनगोपाल व रमेश राठी, श्रीनगर ९. श्रीमती चन्द्रकला शर्मा, ब्यावर।

अन्य प्रकल्पों हेतु सहयोग राशि

१. श्री कृष्ण कुमार साहू, विलासपुर २. श्री भावनेश कुमार सेठी, नई दिल्ली ३. स्वामी आत्मानन्द, मलारना चौड़ ४. मुनि सत्यव्रत, अजमेर ५. श्री कैलाश गुप्ता, नई दिल्ली ६. श्री नरेन्द्र सिंह, अजमेर ७. श्री बोधराज सहगल, करनाल ८. श्री प्रशान्त सोनी, सूरत।

महाशोक की सूचना और श्रद्धांजलि ।

हिंदी जगत् के ही नहीं बल्कि पत्रकारिता जगत, हिंदी को राष्ट्रभाषा के बनाने लिए सतत प्रयत्न करने वाले, अंतरराष्ट्रीय विदेश नीति के महान विचारक, आर्य समाज के महान चिंतक, अंग्रेजी हटाओ आंदोलन के प्रणेता, महान साहित्यकार और पत्रकार, राजनीतिक चिंतक, मां भारती के वाग् पुत्र डॉ वेद प्रताप वैदिक का १४-०३-२०२३ उनके आवास पर अकस्मात निधन हो गया। इस सूचना से पत्रकारिता जगत ही नहीं, संपूर्ण साहित्य जगत, राजनीतिक दल और पूरे भारत के विचारक-चिंतक स्तब्ध है। प्राप्त सूचना के अनुसार डॉ. वैदिक की अंतिम क्रिया दिल्ली के लोधी रोड शमशान घाट पर की जाएगी।

डॉ. वैदिक आर्य लेखक परिषद के संस्थापकों में से एक थे। डॉक्टर साहब का आर्य लेखक परिषद को आशीर्वाद मिलता रहता था। संपूर्ण आर्य जगत डॉ. वैदिक के अकस्मात निधन से खुद को अत्यंत अनाथ पा रहा है। आर्य लेखक परिषद की तरफ से विनम्र श्रद्धांजलि। – **अखिलेश आर्येन्दु, मंत्री, आर्य लेखक परिषद दिल्ली**

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मुनि सत्यजित् (मंत्री परोपकारिणी सभा, अजमेर)
स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक एवं आचार्य सत्यप्रिय आर्य

सामवेद परायण यज्ञ में आहुति देते यजमान

आर जे/ए जे/80/2021-2023 तक प्रेषण : ३०-३१ मार्च २०२३ आर.एन.आई. ३९५९/५९

अनन्य ईश्वर भक्त, योगेश्वर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

की

२०० वीं जयन्ती के अवसर पर
परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

दिव्य एवं भव्य
अन्तर्राष्ट्रीय ऋषि मेला

१७-२० अक्टूबर २०२४

सादर आमन्त्रण

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट